"ॐ श्रीगणेशाय नमः"   "ॐ नमो भगवती-भगवद्भ्याम्"

नव-भक्ति

आचार्य श्री राम सूरति द्विवेदी प्रणीत

श्रीराधा—श्रीकृष्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल्य-२१ : रुपये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ॐ श्री गणेशाय नमः" "ॐ नमो भगवती-भगवद्भ्याम्"

नव-भक्ति

"श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्,
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनम् ॥"

लेखक :

आचार्य श्री राममूरति द्विवेदी

श्रीमद्भागवत महापुराण, श्रीराम चरितमानस,
सम्पूर्ण पुराण एवं सम्पूर्ण रामयण के कथावक्ता,
साहित्याचार्य, वेदान्ताचार्य (विशिष्टाद्वैत)
एम. ए. (मनोविज्ञान), एल. एल. बी. प्रणीत

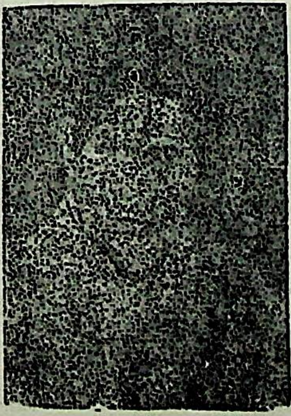

आचार्य श्री राममूरति द्विवेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्च १९९७]

[मूल्य २१ रुपये

प्रकाशक :

आचार्य श्री रामसूरति द्विवेदी

श्री मद्भागवत महापुराण, श्रीराम चरितमानस
सम्पूर्ण पुराण एवं रामायण के कथावक्ता

सुधी पाठकों,

श्री मद्भागवत महापुराण के अन्तर्गत वर्णित नवभक्ति की कथा सुधा का पान कराते समय मेरे अन्तःकरण में भागवत्कृपा से जो प्ररणा उत्पन्न हुई उसे ही मैंने कथा के रूप में अवतरित किया है। ये कथायें भक्ति रूप से अंतःप्रेरित होते हुए अत्यन्त रोचक है। नवो कथाओं के मुख्य पात्र भगवान श्री नारद जी हैं। उन्होंने "नवभक्ति" में किस प्रकार का प्रयास किया है इसे पढ़कर ही आनन्द लिया जा सकता है। इन सभी कथाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि बालक, युवा, बृद्ध, स्त्री, पुरुष, अविज्ञ एवं सुविज्ञ सबके सब सरलता के साथ इन्हें पढ़कर भगवद्भक्ति के तत्त्वों को भली-भांति आत्मसात कर सकते हैं।

—रामसूरति द्विवेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ॐ श्री गणेशाय नमः" "ॐ नमो भगवती-भगवद्भ्याम"

नव भक्ति

कथा-१-प्रथम भक्ति का अधिकारी

"श्रवणं कीर्तनं विष्णोः, स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं, सख्यमात्मनिवेदनम् ॥"
श्रीमद्भागवत महापुराण (७-५-२३)

अर्थ - विष्णु भगवान की भक्ति नौ प्रकार से की जा सकती है।

१—श्रवण २—कीर्तन ३—स्मरण ४—चरण सेवा ५—अर्चना
६—वंदना ७—दास्य ८—सखा भाव ९—आत्म निवेदन

सर्व प्रथम भक्ति के अधिकारी का वर्णन सापेक्ष है। जो इस प्रकार हैं—

एक बार महर्षि नारद जी पृथ्वी लोक पर एक विद्वान ब्राह्मण के घर पधारे। ब्राह्मण ने उनका स्वागत-सत्कार किया और ऊँचे आसन पर बैठाया। उनका चरण धोकर चरणामृत का पान किया तब अपने परिवार के सभी सदस्यों को पिलाया। घर में जगह-जगह छिड़ककर पवित्र किया। नारद जी ने उस ब्राह्मण परिवार को भगवद्भक्ति का उपदेश दिया। ब्राह्मण ने क्षमा याचना करते हुए अपनी एक शंका उपस्थित कर दिया। "भगवान ! मैंने रामायण पढ़कर यह जाना कि इस संसार में राजा जनक से बढ़कर कोई दूसरा भक्त नहीं है और शास्त्रों के अध्ययन से भी मुझे यही निष्कर्ष प्राप्त हुआ। आप तो सम्पूर्ण शास्त्रों के एवं पुराणों के ज्ञाता हैं। सारे वेदों के मर्मज्ञ हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या किसी अन्य शास्त्र, पुराण या वेद में राजा जनक से भी बढ़कर

कोई भक्त हुआ है ?" नारद जी ब्राह्मण के इस प्रश्न से तिलमिला गये। क्रोध से उनकी आँखें लाल हो गईं। अमर्ष के साथ उन्होंने कहा - "हे अज्ञानी ब्राह्मण ! तुम तो महान मूर्ख हो। अरे, भगवान का सबसे बड़ा भक्त मैं तुम्हारे सामने उपस्थित हूँ और तुम मेरे सामने ही तथा मुझसे ही यह पूछ रहे हो कि राजा जनक से बढ़कर कौन भक्त है ? ऐसा करके तुमने मेरा अपमान किया है। इसलिये मैं तुम्हारे यहाँ एक मिनट भी नहीं रहूँगा। मैं जा रहा हूँ।" इतना कहकर वह उठ पड़े और क्रोध में ही वहाँ से चल पड़े। ब्राह्मण ने उनका पैर पकड़ लिया और क्षमा माँगते हुए कहा - 'हे भगवन् ! आप नाराज होकर यहां से न जायें। मैं क्षमा चाहता हूँ।" किन्तु नारद जी ब्राह्मण की कोई बात सुने बिना ही क्रोध के साथ वहाँ से चले गये। रास्ते में उन्होंने सोचा कि अपने पिता ब्रह्मा जी से चलकर पूछूँ, तो शायद इस मूर्ख ब्राह्मण की बात का स्पष्टीकरण हो जाय। सीधे वह श्री ब्रह्मा जी के पास जा पहुँचे। उनके इस विचार को सुनकर ब्रह्मा जी जान गये कि महान भक्त मेरा पुत्र नारद अभिमान से पूर्ण है। भगवान विष्णु अभिमानी का सिर नीचा करके छोड़ते हैं। अतः मेरे पुत्र नारद का कोई अनिष्ट न हो जाय, इसका उपाय करना चाहिये। यही सोचकर उन्होंने कहा— "हे पुत्र नारद ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मैं तो नहीं दे सकता और साथ ही साथ मैं यह भी कहूँगा कि तुम इस प्रश्न को भगवान विष्णु तक मत जाने देना। इसी में तुम्हारी भलाई है और हो सके तो इस बात को भगवान शिव जी से भी मत कहना।" ब्रह्मा जी की ऐसी बात सुनकर नारद जी वहाँ से चल पड़े और सीधे शिव जी के पास जा पहुँचे। इनके उद्देश्य को सुनकर भगवान् शिव जी भी इन्हें भगवान विष्णु के पास जाने से मना करते हुए स्वयं अनभिज्ञता प्रदर्शित किये। नारद जी ने सोचा कि शायद मेरी भक्ति से पिता ब्रह्मा जी एवं भगवान शिव को ईर्ष्या है।

अतः वह भगवान विष्णु के पास जा पहुँचे। वह उस समय क्षीर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सागर में शयन कर रहे थे। श्री जी उनकी सेवा कर रही थी। नारद जी ने प्रणाम कर भगवान विष्णु से पूछा —"भगवन् ! मैं आप का ही नाम दिन-रात लेता रहता हूँ, किन्तु उस ब्राह्मण की दृष्टि में मेरी कोई गणना नहीं। वह राजा जनक को मुझसे बढ़कर भक्त मानता है। यह कैसे हो सकता है ? राजा जनक अपने राजकाज में सदैव लगे रहते हैं। किसी समय अवकाश पाये, तो आपका स्मरण करते हैं। फिर भी उस ब्राह्मण ने उन्हें मुझसे बढ़कर भक्त माना है। क्या उसने मेरा तिरस्कार नहीं किया है ?" भगवान विष्णु ने देखा कि महान भक्त नारद जी इस समय मान अपमान की बात लेकर अहंकार की अग्नि में जल रहे हैं। इनके इस अहंकार का यदि मैंने भक्षण न किया, तो यह इसी में जलते रहेंगे। ऐसा सोचकर भगवान विष्णु ने नारद जी से कहा —"महर्षि नारद जी, आप बात तो सही कह रहे हैं, किन्तु उस ब्राह्मण ने राजा जनक को ही सबसे बड़ा भक्त माना, इसका खंडन मैं कैसे कर सकता हूँ ? ऐसा करिये, आप मेरे साथ चलिये। मैं आप को राजा जनक के दरबार में ले चलता हूँ। आप की समस्या का समाधान वहाँ स्वयं हो जायगा।" भगवान विष्णु की यह बात नारद जी को जँच गयी और वह तुरन्त भगवान के साथ चल पड़े। वे राजा जनक के राज्य की सीमा में पहुँच गये। भगवान ने कहा —"नारद जी हम दोनों राजा जनक के यहाँ दूसरे वेष में चलेंगे, तभी वहाँ निष्पक्ष निर्णय मिलेगा।" नारद जी ने स्वीकार कर लिया। भगवान ने नारद जी से कहा —"नारद जी, मैं कथावाचक ब्राह्मण बन जाता हूँ और आपको श्रोता सेठ बना देता हूँ।" ऐसा कहकर भगवान ने नारद जी को सेठ का कपड़ा पहना दिया और स्वयं कथावाचक के रूप में हो गये। नारद जी ने अपनी लंगोटी की एक पोटली बनाकर अपने हाथ में ले लिया। धोती, कुरता और टोपी पहने हुए नारद जी साक्षात् सेठ बन गये थे। धोती पहने हुए चादर ओढ़े हुए मस्तक पर चन्दन का तिलक लगाये हुए भगवान विष्णु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साक्षात् कथावाचक ब्राह्मण बन गये थे। इसी रूप में वे राजा जनक के दरबार में जा पहुँचे।

राजा जनक ने देखा कि उनके दरबार में एक ब्राह्मण एक व्यक्ति के साथ पधारे हैं, तो वह अपने आसन से उठकर दौड़ पड़े। आकर उन्होंने ब्राह्मण को प्रणाम किया और कहने लगे—"हे विप्र! आपने मेरे यहाँ पधार कर मेरे इस स्थान को पवित्र कर दिया।" इस प्रकार राजा जनक ने ब्राह्मण कथावाचक वेषधारी भगवान विष्णु का विधिवत अभिनन्दन किया और स्वागत सत्कार के बाद उनके आने का प्रयोजन पूछा। भगवान विष्णु ने ब्राह्मण वेष में ठीक कथावाचक की शैली में जनक से अपने आने का प्रयोजन बताते हुए कहा—"राजन्! मैं एक कथावाचक हूँ और यह (सेठ वेषधारी नारद जी की ओर संकेत करके) मेरे यजमान सेठ। मैं इन्हें आप के राज्य में कथा सुनाना चाहता हूँ। आप से निवेदन है कि आप इस पुनीत कार्य के लिये एक उचित स्थान का प्रबन्ध करा दीजिये।" राजा जनक जी ने कृतज्ञता भाव से कहा—"हे विप्र! आप के आगमन मात्र से ही मैं धन्य हो गया हूँ। मेरा राज्य पवित्र हो गया है। इतने पर भी आप यहाँ कथा स्थान खोजकर मुझे और पवित्र कर दिये। आपकी जहाँ आज्ञा हो, मैं वहीं पर प्रबन्ध करता हूँ। मुझे भी भगवान के यशगान की महिमा का श्रवण करने का अवसर प्राप्त होगा। दरबार में कहिये, महल में या बगीचा में जहाँ कहीं कहिये, मैं अभी प्रबन्ध करा देता हूँ।" ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने कहा—"राजन्! कथा के लिये सबसे उपयुक्त स्थान बगीचा होगा। अतः बगीचे में ही प्रबन्ध करा देवें, राजा जनक ने अपने परिजनों को शीघ्र ही कथा स्थान तैयार करने का आदेश दिया। अल्प समय में ही सम्पूर्ण व्यवस्था हो गयी। कथावाचक का आसन मध्य में सजाया गया। सामने महिलाओं के लिये एक तरफ, पुरुषों के लिये दूसरी तरफ बैठने का स्थान बनाया गया। कथावाचक के आसन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के ठीक सामने एक ओर सेठ रूपी नारद जी का आसन श्रोता के रूप में बनाया गया । उनके सामने दूसरी ओर राजा जनक ने अपने लिए आसन लगवाया । इस प्रकार कथा के दो प्रधान श्रोता थे। एक सेठ रूपी नारद जी दूसरे राजा जनक जी । शेष सब नर-नारी, सामान्य श्रोता थे।

कथा समुचित समय में प्रारम्भ हुई । सभी श्रोतागण अपने-अपने स्थान को ग्रहण कर लिए । नारद जी अपने आसन पर बैठकर कथा श्रवण करने लगे अपने लँगोटी की पोटली को बगल में रख दिये। राजा जनक अपने आसन पर बैठकर, तन्मय होकर कथा श्रवण करने लगे। कथा को प्रारम्भ हुए अभी कुछ ही समय बीता था कि प्रतिहारी लोग दौड़े हुए आये और घबराये हुए राजा जनक से प्रार्थना करने लगे "महाराज! चाँदी का महल आग की लपटों में है। आपके नगर में आग लग गयी है। धीरे-धीरे आग चारों तरफ फैल रही है । आप शीघ्र ही कोई उपाय करें, इस अग्निशमन का ।" भगवान विष्णु ब्राह्मण रूप में धारा प्रवाह कथा कह रहे हैं और राजा जनक तन्मय होकर सुन रहे हैं । तब तक कुछ प्रतिहारी लोग और आकर प्रार्थना करने लगे— 'महाराज! चाँदी का सारा महल जलकर समाप्त हो चुका है। अब स्वर्ण निर्मित सभी भवन जलकर खाक हो रहे हैं। शीघ्र कोई उपाय करें अन्यथा सारा जनकपुर जलकर खाक हो जायेगा।" कथा चल रही है। राजा जनक तन्मय होकर कथा सुन रहे हैं। नारद जी ने राजा जनक को खोदना प्रारम्भ कर दिया - "जनक जी, आप का नगर जल रहा है। चाँदी सोने का महल जल रहा है। आप बैठकर कथा सुन रहे हैं। जब सारी सम्पत्ति ही जल जायेगी, तो आप कथा सुन कर क्या करेंगे? भगवान विष्णु कथावाचक के रूप में कथा कहते जा रहे हैं। राजा जनक कथा श्रवण कर रहे हैं। नारद जी ने मुस्कुराते हुए पुनः जनक जी को सतर्क करना चाहा,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किन्तु राजा जनक की तन्मयता भंग नहीं हुई। तब कुछ और प्रतिहारी दौड़े आये और हाँफते हुए बोले—"महाराज, सोने चाँदी का सारा महल जल चुका है। अब आग रनिवास में प्रवेश कर गई है। सारी रानियाँ आग में घिर गई हैं। यदि शीघ्र उपाय नहीं किया गया, तो सब की सब जलकर खाक हो जायेंगी। कथा बन्द नहीं हुई। राजा जनक तन्मयता से कथा श्रवण कर रहे हैं। नारद जी ने राजा जनक की भर्त्सना करते हुए कहा—"राजन्! आप की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। अरे, आपका सर्वस्व जला जा रहा है और आप कथा सुन रहे हैं।" अब तक आग कथा मण्डप तक आ गई।

वक्ता बने हुए भगवान विष्णु कथा कहते जा रहे हैं और राजा जनक कथा सुन रहे हैं। अन्य सभी जन-परिजन घबरा गये थे। इधर नारद जी जब राजा जनक को कहकर हार गये, फिर भी वह कथा श्रवण से ध्यान को भंग नहीं किये, तब स्वयं अपने बचाव की सोचने लगे। अब आग बिल्कुल समीप आ गयी। सभी श्रोताओं में भगदड़ मच गई। नारद जी की लँगोटी की पोटली नीचे रखी थी। उन्होंने यह सोचकर पोटली को उठाकर अपने हाथ में छिपा लिया कि यदि मेरी लँगोटी जल गयी, तो मैं क्या पहनूँगा। सेठ रूप कपड़ा जो मुझे प्राप्त है, वह तो भगवान विष्णु की माया का है। यहाँ से उठने के बाद वह माया से इसे समेट लेंगे। लँगोटी के बिना मैं निर्वस्त्र हो जाऊँगा।" इसीलिये वह पोटली हाथ में छिपाकर उठ खडे हुए और आग से बचने के लिये वहाँ से भागने के लिये पैर उठाने लगे। किन्तु उनका पैर वहीं जम गया। उठाने से उठा ही नहीं। नारद जी घबरा गये। पैर को खींचने लगे, किन्तु पैर ऐसा चिपका कि धरातल को छोड़ा ही नहीं। अब नारद जी का रहा सहा धैर्य भी जाता रहा।

इसी समय एक चमत्कार हुआ। आग जो समीप तक आ गयी थी, वह सहसा बुझ गयी। आग के बुझते ही जनकपुर की शोभा यथावत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गयी। न तो कोई महल जला था, न कोई रानी ही। सब कुछ यथावत दिखलाई पडने लगा। वक्ता रूपी भगवान विष्णु ने कथा बन्द कर दिया था और कथा बन्द होते ही राजा जनक का ध्यान भग हो गया। उनकी आँखें खुल गयीं। उन्हें केवल यही याद रहा कि कथा में क्या कहा गया था। नगर में लगी आग के बारे में उन्होंने सुना तक नहीं था। इतना सारा काण्ड होकर स्वयं समाप्त भी हो गया, किन्तु राजा जनक उसे देख तक नहीं सके। नगर यथावत हो चुका था। इसी समय एक और चमत्कार हुआ। भगवान विष्णु कथावाचक के रूप को त्याग करके अपने वास्तविक रूप में आ गये। नारद जी का मेठ का कपडा स्वयं लुप्त हो गया और उनकी लँगोटी स्वयं उनके हाथ से निकलकर उनके शरीर पर विराजमान हो गयी। राजा जनक ने अपने समक्ष भगवान विष्णु एवं महामुनि नारदजी को देखकर अपार हर्ष का अनुभव किया। वह भगवान विष्णु के चरणों पर गिर पडे और महामुनि नारद जी को प्रणाम किया। भगवान ने नारद जी से कहा —"नारद जी, आप अपने प्रश्न का उत्तर तो प्राप्त कर लिये होंगे। आप को मैं स्पष्ट कर दे रहा हूँ। मेरी नौ भक्तियों में प्रथम भक्ति श्रवण भक्ति है।

इन नौ भक्तियों में श्रवण भक्ति के अन्तर्गत ही अन्य आठों भक्तियों की शक्ति भी विद्यमान है। इनमें से प्रथम भक्ति का ही उदाहरण आपके सामने मैंने प्रस्तुत किया। राजा जनक का सारा नगर, सारी सम्पत्ति, यहाँ तक कि रनिवास जल रहा था, किन्तु वह कथा श्रवण के समय कथा में ही तन्मय रहे। सब कुछ जलकर भस्मसात् हो रहा था, किन्तु कथा श्रवण के समक्ष इन्होंने उसकी परवाह नहीं की, जबकि आप अपनी केवल एक लँगोटी का मोह परित्याग न कर सके। कथा के बीच में ही आपने अपनी लँगोटी को आग में जलने से बचाने के लिये उठाकर छिपा लिया। अब आप ही बताइये कि कथा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रवण के समय राजा जनक ने अपने सर्वस्व की परवाह की ? अर्थात् नहीं। और आप अपनी लँगोटी की चिन्ता में शान्ति से रह नहीं सके। राजा जनक को कथा श्रवण के समय अपने सर्वस्व का लोभ नहीं था। आपको अपनी मात्र लँगोटी का लोभ था। अब आप ही सोचिये कि मेरी नौ भक्तियों में से प्रथम भक्ति में ही आप असफल है, फिर आठों अन्य भक्तियों का क्या विवरण दिया जाय ? इसीलिये भूमण्डल पर स्थित वह ब्राह्मण समुचित भक्ति के अधिकारी राजा जनक को ही परमभक्त माना है।" नारद जी का लज्जा से सिर नीचा हो गया। उनका अहंकार टूट गया।

कथा-२-द्वितीय भक्ति का अधिकारी

प्रथम भक्ति श्रवण में राजा जनक जी श्री नारद जी को अभिभूत कर चुके थे, इसलिये श्री नारद जी गम्भीरता के साथ अन्य भक्ति को आत्मसात करने लगे। उनके भक्ति एवं निष्ठा को देखकर देवता लोग उनकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि अब श्री नारद जी के समान अन्य कोई दूसरा भक्त नहीं रह गया है। इससे श्री नारद जी को पुनः अभिमान हो गया। विशेष कर द्वितीय भक्ति-कीर्तन में। इससे उनके पिता ब्रह्मा जी उनसे नाराज हो गये। एक दिन इसी बात को लेकर पिता पुत्र में पुनः झड़प हो गयी। ब्रह्मा जी ने कहा --'वत्स नारद ! तुम्हें प्रथम भक्ति में भी अभिमान था, जिसे राजा जनक ने अपनी भक्ति से तोड़ दिया। अब तुम द्वितीय भक्ति में भी वही जिद लेकर अभिमानी हो गये हो। श्री नारद जी को पिता ब्रह्मा की बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। आखिर वह ब्रह्मा जी को असन्तुष्ट कर स्वयं असंतोष की आग में जलते हुए ब्रह्मलोक से चल पड़े। रास्ते में वह "हरे कृष्ण गोविन्द मोहन मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव" हरि कीर्तन करते हुए और मधुर स्वर में अपनी वीणा बजाते हुए चले आ रहे थे। मार्ग में एक ब्रह्मचारी से उनकी मुलाकात हो गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मचारी ने श्री नारद जी से प्रणाम करते हुए कहा "हे मुने! भगवत्कृपा से आपका दर्शन बड़े शुभ अवसर पर हुआ है। आप ही को खोजता हुआ गन्धर्व लोक से मैं आ रहा था। गन्धर्वों ने मुझे बताया कि आप गन्धर्व लोक से ब्रह्मलोक गये हैं। यह सुनकर मैं आपके पास आ रहा था। सौभाग्य से आपका दर्शन रास्ते में ही हो गया। बिना किसी श्रम के सहज में ही आपका दर्शन यह प्रकट कर रहा है कि मेरी कामना अवश्य पूर्ण होगी।" ब्रह्मचारी की बात सुनकर श्री नारद जी ने कहा-- "ब्रह्मचारी जी, आप मुझे क्यों खोज रहे हैं? कोई विशेष वार्ता है क्या?" विनम्रता के साथ ब्रह्मचारी जी ने कहा --"हे महामुने! मुझे एक सन्देह हो गया है। उसके निवारण के लिये मैं भगवान शिव जी के पास गया। उन्होंने मुझे आपसे मिलकर समाधान करने की सलाह दी। मैं तभी से आपको खोज रहा हूँ। सौभाग्य से आप थोड़े ही श्रम से मुझे मिल गये। अब आप कृपा करके मेरे सन्देह को दूर कीजिए।" श्री नारद जी हर्ष और गर्व से रोमांचित हो गये। उन्होंने किंचित मुस्कराते हुए कहा— "ब्रह्मचारीजी, कौन ऐसा सन्देह है, जिसके निवारण का अधिकारी स्वयं भगवान शिव ने मुझे बताया है?" ब्रह्मचारी ने हाथ जोड़कर श्री नारदजी से कहा—"हे महर्षे! नौ भक्ति में से प्रथम भक्ति श्रवण के बारे में तो मुझे मालूम हो गया है कि राजा जनक जी श्रवण भक्ति के सर्वोत्तम अधिकारी हैं, किन्तु द्वितीय कीर्तन भक्ति का सबसे बड़ा अधिकारी कौन है? मैंने अपने इस सन्देह को जब भगवान शिव के समक्ष रखा, तब उन्होंने सुझाव दिया --"श्री नारद जी रात दिन हरि कीर्तन करते रहते हैं। अतः इस शंका का समाधान वही कर सकते हैं।" इस प्रकार भगवान शिवजी की आज्ञा से मैं आपके पास आया हूँ। कृपा करके मेरा संदेह दूर कीजिए।

ब्रह्मचारी के संदेह को सुनकर श्री नारद जी का चेहरा तमतमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आया। अपमान का अनुभव करते हूए श्री नारदजी ईर्ष्या और घृणा से भर गये। आँखे लाल करते हुए वह चिल्ला पड़े —'ब्रह्मचारी, तीनों लोक जानता है कि कीर्तन भक्ति में मेरा अद्वितीय स्थान है। रात दिन प्रतिक्षण हरिकीर्तन ही मैं करता रहता हूँ। मेरे समान और कौन कीर्तन भक्ति का अधिकारी हो सकता है? भगवान शिव जी तो मुझस बहुत पहले से जलते आ रहे हैं। इसी कारण उन्होंने स्पष्ट नहीं बताया कि हरिकीर्तन भक्ति का एकमात्र अधिकारी मैं ही हूँ। सदेव चलते रहने के कारण मैं प्रथम भक्ति में कुछेक व्यक्तियों का सामना नहीं कर सका, किन्तु कीर्तन भक्ति में मुझसे बढ़कर कौन बन सकता है।" इसी समय वहाँ पर अग्निदेव आ गये। श्री नारदजी से प्रणाम करते हुए उन्होंने कहा—"हे महर्षे! आज सायंकाल देवलोक में अखण्ड कीर्तन का आयोजन होने जा रहा है। महाराज इन्द्र ने मुझे आपको बुलाने के लिये भेजा है। उनका कथन है कि कीर्तन में आपके समान कोई दूसरा नहीं है अतः आपका उसमें रहना अति आवश्यक है। मेरा सौभाग्य है, जो आप मुझे शीघ्र ही मिल गये।" इसी समय ब्रह्मचारी ने कहा "हे मुने! यह अच्छा अवसर भगवान की कृपा से स्वयमेव प्राप्त हो गया ह। आपके साथ मैं भी उस कीर्तन गोष्ठी में चलता हूँ। मेरी शंका का समाधन भी वहीं पर स्वयमेव हो जायेगा।" श्री नारदजी ब्रह्मचारी की बात स्वीकार करते हुए तुरन्त देवलोक चल पड़े। शीघ्र ही तीनों व्यक्ति वहाँ पहुँच गये। महाराज इन्द्र ने श्री नारदजी का स्वागत किया।

इन्द्र ने श्री नारदजी से प्रार्थना की—"हे महर्षे! आप ही कीर्तन का श्रीगणेश करें। सम्पूर्ण देवता लोग आपके पीछे-पीछे कीर्तन में साथ देंगे। श्री नारद जी ने ब्रह्मचारी को अपने पास बैठाकर कीर्तन प्रारम्भ कर दिया। कीर्तन शुरू हुए अभी थोड़ी ही देर हुआ था कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक भयंकर आवाज आने लगी। सम्पूर्ण देवता लोग उस भयानक घरघराहट आवाज को सुनकर घबरा गये। महाराज इन्द्र ने अपने वज्र को उठा लिया और इस भयानक आपत्ति से सामना करने के लिये तैयार हो गये। लेकिन कीर्तन मण्डली के सम्पूर्ण देव एव ऋषि-महर्षि-गण भयभीत हो एक दूसरे की ओर ताकने लगे। कोई कहता- "यह पहाड है, जो हमें मारने आ रहा है।" कोई कहता —"यह पहाड है, जो उडता हुआ चला आ रहा है।" महाराज इन्द्र सभी पर्वतों के पंख को काटकर अचल कर दिये थे। इस महान पर्वत पर शायद उनकी दृष्टि नहीं पहुँच पायी थी या इसकी महानता के कारण वह काटने मे असमर्थ रहे हों। वही उडता आ रहा है (पुराण की एक कथा है कि पहले सभी पर्वत पंख वाले थे। वे सभी उडते थे। किसी समय इन्द्र ने क्रुद्ध होकर सम्पूर्ण पर्वतों के पंख को काट डाला था। तभी से पर्वत अचल हो गये। " कोई कहता—यह धूमकेतु तारा है, जो आकाश मण्डल से टूट टूट कर आ रहा है। अब किसी की कुशल नहीं है। सभी मारे जायेंगे।" इस प्रकार देवता एवं ऋषि-महर्षि अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार तर्क-वितर्क कर उस भयानक आतंक से अत्यधिक भयभीत हो गये। महाराज इन्द्र ने अपने अमोघ वज्र का उस पर प्रहार किया. किन्तु यह महान आश्चर्य था कि वज्र थोडी दूर जाकर वापस लौट आया। इन्द्र घबरा गये। उन्हें अब कुछ सूझ नहीं रहा था। उनकी घबराहट से सम्पूर्ण कीर्तन मण्डली भय से काँपने लगी। देखते-देखते वह आतंक कि बिल्कुल समीप आ गया। श्री नारदजी ने कहा —'आप लोग घबराइये नहीं, भगवान की कोई माया है। जनकपुर में भी भगवान ने ऐसी ही माया की रचना की थी। उस समय में भी उनकी माया के चपेट में आ गया था। अब की बार मैं चैतन्य हूँ। चुपचाप आप सब बैठें रहिये। कुछ होगा नहीं।" श्री नारद जी के धैर्य बँधाने न सब चुप-चाप दम साधे बैठ गये। ब्रह्मचारी अपने आसन पर आसीन आँखें मूँदे समाधिस्थ था। एक वृद्ध व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क ताल बजाता हुआ अभी भी "जय आदि शक्ति सीता जी, जय परम ब्रह्म श्रीराम" का कीर्तन करता हुआ मस्त था। श्री नारद जी ने ब्रह्मचारी एवं उस वृद्ध व्यक्ति को भी सचेत किया कि वे भी चुपचाप भगवान की माया का दर्शन करें. किन्तु वे दोनों मानों श्री नारद जी के वचन को सुने ही नहीं यथावत् अपनी-अपनी क्रिया में मस्त थे। इतने बड़े आतंक का मानों उन्हें कोई मान ही नहीं हुआ। अब तक उस आतंक का तूफान बिल्कुल समीप आ गया।

सभी देवताओं का वस्त्र उनके शरीर से छट-छूट कर उडने लगा लगा। अघोवस्त्र को अपने दोनो हाथों से पकडे पूए देवता वहाँ से भागने लगे। श्री नारद जी ने सब को रोकना चाहा किन्तु उनका कहना अब कोई नहीं सुना। शीघ्र ही सब भाग खड़े हुए। इन्द्र भी अपने वस्त्र को सँभालते हुए वहाँ से भाग गये। श्री नारद जी ने देखा कि कीर्तन-गोष्ठी स्थान पर अब केवल उनके साथ आया हुआ ब्रह्मचारी समाविस्थ है और वह वृद्ध व्यक्ति करताल बजाता हुआ—"जय आदि शक्ति सीता जी, जय परम ब्रह्म श्रीराम" का कीतन करता हुआ मस्त है। सबस बड़े आश्चर्य की बात यह थी कि इन दोनों के वस्त्र जैसे के तैसे थे। उनमें कोई बेचैनी नहीं थी। श्री नारद जी का भी ऊपर का वस्त्र उड गया। अब वह वीणा फेंककर दोनों हाथ से अपनी लँगोटी पकड़े हुए वहाँ स भागने को उद्यत हुए, कितु उनका पैर अति चेष्टा करने पर भी अपने स्थान से तिल-मात्र नहीं उठा। अब तो उनकी घबराहट इस हद तक पहुँच गयी कि वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। आँख मूँदकर वहीं बैठ गये। उनके बैठते ही सहसा वह आतंक शान्त हो गया। थोड़ी देर तक आँखें मूँदे श्री नारद जी बैठ रहे उनका शरीर पीपल के पत्ते की तरह काँप रहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। उस नीरवता में केवल वृद्ध व्यक्ति की ओर देखकर आश्चर्यचकित रह गये उन्होंने देखा कि कीर्तन करनेवाले वृद्ध व्यक्ति के स्थान पर वह वृद्ध नहीं है, अपितु श्री हनुमानजी हैं। वह अभी भी करताल बजाते हुए कीर्तन में मस्त हैं। श्री नारद जी का आश्चर्य उस समय और बढ़ गया, उन्होंने समाधिस्थ ब्रह्मचारी के स्थान पर साक्षात् विष्णु को लक्ष्मी क साथ में देखा। भगवान विष्णु एवं भगवती लक्ष्मी जी अपने वरदहस्त को श्री हनुमान जी की ओर करके बैठे मुस्करा रहे हैं। देवराज इन्द्र सम्पूर्ण देवताओं के साथ आकाश मण्डल से स्तुति करते हुए भगवती-भगवान एवं भक्त पर पुष्प वृष्टि कर रहे हैं। ऋषि महर्षिगण स्तुति कर रहे हैं। आश्चर्यचकित नारद जी से भगवान विष्णु ने कहा - 'नारद जी, आप मेरे प्रिय भक्त हैं, किन्तु आपको अभिमान पुनः हो गया था कि कीर्तन में आप के समान कोई दूसरा नहीं है। अब आप देखिये, एक साधारण-सी आपत्ति को देखकर आप कीर्तन भूल गये और सम्पूर्ण देवताओं, ऋषियों एव महर्षियों को मिथ्या धैर्य बँधाने लगे। आपका मन कीर्तन से हटकर धैर्य बँधाने में लगा था। अन्य सभी अपने प्राण बचाने की चिन्ता में थे। उस समय श्री हनुमान जी वृद्ध के वेष में कीर्तन कर रहे थे। उन्हें यह भी ज्ञान नहीं था कि कोई आपत्ति आ रही है या आ गयी है, क्योंकि उनका मन कीर्तन के समय सदैव हम भगवती-भगवान में लगा रहता है। कितनी घटना हो गयी, किन्तु इन्हें कुछ भी पता नहीं। इस समय मैं लक्ष्मी के साथ सीता-राम के रूप में इनके हृदय में विराजमान हूँ। यह हम दोनों का दर्शन अपने हृदय में करके आत्मविभोर हो रहे हैं। अपने स्वाभाविक स्थिति में होने के कारण यह वृद्ध व्यक्ति का रूप त्यागकर अपने स्वरूप में आ गये हैं। अब आप ही बताइये कि कीर्तन भक्ति में क्या आप हनुमान जी की बराबरी कर सकते हैं?" श्री नारद जी का अभिमान टूट चुका था। उनका सिर झुक गया। प्रणाम कर कहने लगे—"भगवन्! आपकी मेरे ऊपर बड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृपा है। आपने मेरे थोथे अभिमान को चकनाचूर कर दिया। मेरी एक भी त्रुटि को आप देखते रहते हैं। भगवन् ! आप को बार-बार प्रणाम हैं।" श्री नारद जी भक्तराज हनुमान को प्रणाम करने चलते हैं, तो क्या देखते हैं कि उनके वक्ष स्थल पर श्री सीता राम जी विराजमान हैं। श्री नारद जी हर्ष से विभोर होते हुए बोल पड़े—"कीर्तन भक्ति के सच्चे अधिकारी सहित भगवती-भगवान को मेरा बार-बार प्रणाम है।"

कथा-३-तृतीय भक्ति का अधिकारी

श्री नारद जी कीर्तन भक्ति में पूर्ण सफल न होने से काफी लज्जित थे। अतः वह अब स्मरण भक्ति में सफल होने के लिए चेष्टा करने लगे। एक दिन उनके पिता ब्रह्मा ने कहा—"वत्स नारद ! अब आगे की तीसरी भक्ति "स्मरण" है। मेरी समझ से उसमें भी तुम पूर्ण सफल नहीं हो पाओगे। अतः तृतीय भक्ति का रहस्य जाकर प्रह्लाद से सीख लो। क्योंकि स्मरण भक्ति में प्रह्लाद पूर्ण समर्थ हैं। ब्रह्मा जी की बात सुनकर श्री नारद जी चुप नहीं रह सके। क्रोध एवं क्षोभ से व्यथित श्री नारद जी ने कहा —"पिताजी, आप मुझे बिलकुल नादान समझते हैं क्या ? अरे, कीर्तन भक्ति में हनुमान जी यदि मुझ से बढ़ गये, तो क्या मैं इतना गया बीता हूँ कि जिस प्रह्लाद को मैंने गर्भ में ही देवराज इन्द्र से रक्षा की थी, वही प्रह्लाद आज मेरा गुरु बन जायेगा ? क्या आपको यह ज्ञान नहीं है कि जब वह गर्भ में था, तो उसी समय मैंने उसी को उद्देश्य करके उसकी माता को आत्मज्ञान का उपदेश दिया था, उसी उपदेश को सुनकर तो प्रह्लाद थोड़ा-सा भगवान का भक्त हो गया। एक प्रकार से मैं ही उसका गुरु एवं संरक्षक दोनों हूँ। वह मेरा शिष्य हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज आप मेरे ही शिष्य को मेरा गुरू बनाने की सलाह दे रहे हैं। पिताजी, वृद्ध होने के कारण आपकी बुद्धि कमजोर पड गयी है। अतः आप की शिक्षा ग्रहण करना मूर्खता होगी।" ब्रह्मा जी ने कहा – "वत्स नारद ? तुम्हारा भ्रम अभी भी दूर नहीं हुआ है। तुम्हें भक्ति में जो सफलता नहीं मिलती, उससे पिता होने के कारण मेरा सिर नीचा होता है। गौरव के साथ मैं किसी से कह नहीं सकता कि मेरा पुत्र नारद प्रभु का पूर्ण भक्त है। यदि भक्त प्रह्लाद के प्रति तुम्हे कोई सन्देह हो, तो तुम स्वयं जाकर उसकी स्मरण भक्ति की परीक्षा ले लो" पिता की दृढ वाणी सुनकर नारद जी मौन हो गये।

श्री नारद जी के अहं को काफी चोट पहुँची। कोई भी पुत्र अपने पिता के सामने विजेता बनकर आता है, तो पिता उससे काफी प्रसन्न होता है। पुत्र के लिए इससे बढ़कर गौरव की और क्या बात हो सकती है ? सभी पुत्रों का यह कर्तब्य होना चाहिये कि उसके पिता प्रसन्न हो जायें। इस प्रकार सोच-विचार करते हुए श्री नारद जी ने अपने मन में संकल्प किया कि मैं 'स्मरण' भक्ति में प्रह्लाद को भी बहुत पीछें छोड़ दूँगा। इसी संकल्प के साथ श्रीं नारद जी प्रह्लाद के पास चल पड़े। कुछ दूर चलने पर उन्हें रास्ते में अत्यन्त दुर्बल खिन्न ब्राह्मण रोता मिला। नारद जी को देखकर वह और जोर-जोर से रोने लगा। नारद जी ने पूछा—"भाई, आप कौन हैं ? दीन की तरह इतना रो क्यों रहे हैं ? ब्राह्मण ने रोते हुए कहा - हे दयालु भगवन् ! आपकी दयालुता के बारे में मैंने बहुत कुछ सुना है ? भगवत्कृपा से आज आप का दर्शन हो गया। आप मेरे दुःख का कारण पूछ रहे हैं। यदि आपको मैं अपने दुःख का कारण नहीं बताऊँगा तो और किसे बताऊँगा ? मेरी पत्नी तीन दिन से भूखी है और मेरे दोनों बेटे चोकर (आटा चालने के बाद जो भूसी बचती है. उसे चोकर कहते हैं) की रोटी खाकर रह रहे हैं। आज चोकर भी घर में नहीं है। भूख से बिल-बिलाती मेरी पत्नी से वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों बच्चे भोजन माँग रहे हैं। बच्चों को भूखा देखकर वह अत्यन्त व्याकुल है। उसकी निरीहता देखकर मैं सहन न कर सका। कुछ भिक्षा के लिए निकल पड़ा। किन्तु दुर्भाग्य से मुझे आज भिक्षा भी नहीं मिली। मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? यदि पत्नी और बच्चों की भूख शान्त करने का कोई उपाय नहीं कर सकता, तो आत्महत्या कर लूँगा। ब्राह्मण की बात सुनकर नारद जी द्रवित हो गये। उन्होंने कहा हे ब्राह्मण! आप मेरे साथ चलिये। मैं प्रह्लाद के पास चल रहा हूँ। प्रह्लाद इस समय राजा है। उसका मैं शिक्षक ही नहीं, अपितु प्राणों का रक्षक भी हूँ। उससे मैं आपको पर्याप्त धन देने को कहूँगा। उससे आपकी सारी समस्या हल हो जायेगी। जीवन-पर्यन्त आपको किसी भी वस्तु का अभाव नहीं होगा।" ब्राह्मण बहुत ही प्रसन्न हुआ और नारद जी के साथ तत्काल चल पड़ा।

शीघ्र ही वे प्रह्लाद जी के यहाँ पहुँचे। प्रह्लाद जी ने देखा कि उनके दरबार में महर्षि नारद पधारे हैं। वह सिंहासन से तुरन्त उठ पड़े और दौड़कर उनके चरणों पर गिर पड़े। नारद जी ने आशीर्वाद देते हुए प्रह्लाद को उठाया। वह तत्काल बोल पड़े—"प्रह्लाद! यह गरीब ब्राह्मण मेरे साथ आया हुआ है। इसकी पत्नी एवं बच्चे भूखे हैं। तुम इसे इतना धन दे दो, जिससे जीवनपर्यन्त यह अपने परिवार का पालन-पोषण करता हुआ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके।" प्रह्लाद जी ने तत्काल अपने कोषाध्यक्ष को आदेश दिया और अधिक मात्रा में बहुमूल्य रत्नों का ढेर उस ब्राह्मण के सामने उपस्थित हो गया। इतना धन पाकर वह ब्राह्मण बड़ा प्रसन्न हुआ। नारद जी ने ब्राह्मण को अब बिदा करना चाहा, किन्तु ब्राह्मण ने कहा—"हे भगवन!" मैं आपको अपने घर साथ ही ले चलूँगा, जिससे मेरे पत्नी एवं बच्चे भी आनदित हो जायें। नारद जी ने ब्राह्मण से कहा—"मैं प्रह्लाद की स्मरण भक्ति की परीक्षा लेने आया हूँ। उसमें कुछ समय लगेगा। उधर आपके बाल-बच्चे भूखे हैं। अतः आपको घर शीघ्र पहुँचना है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किंतु ब्राह्मण ने उनसे प्रार्थना की—"हे भगवन् ! जैसे इतनी देर उन्होंने कष्ट पाया है, वैसे ही थोड़ी देर और सही। मैं तो आपको साथ लेकर ही चलूँगा।" नारद जी को ब्राह्मण की बात माननी पड़ी। अब उन्होंने प्रह्लाद से कहा—प्रह्लाद ! यह तो मुझे मालूम ही है कि तुम भगवान के बहुत बड़े भक्त हो। तुम्हारी भक्ति से ही प्रसन्न होकर तुम्हारी रक्षा के लिए भगवान ने नृसिंह अवतार धारण किया और तुम्हें मारने को उद्यत घोर असुर तुम्हारे पिता जी को ही नृसिंह भगवान ने मार डाला। मैंने सुना है कि स्मरण भक्ति में तुम्हारे समान कोई दूसरा नहीं है। अतः मैं तुम्हारी स्मरण भक्ति देखने आया हूँ। मैं भी तुम्हारे साथ भगवत्स्मरण करूँगा।" प्रह्लाद जी ने विनम्रता से कहा—"हे भगवन ! मैं जो कुछ हूँ, सो आपकी देन हूँ। आपने यदि गर्भ में मेरी रक्षा न की होती, तो मेरा अस्तित्व ही मिट गया होता। जब मैं गर्भ में था, तो आपने मेरी माता को भक्ति एवं ज्ञान का उपदेश दिया था। उसे मैंने अक्षरशः ग्रहण कर लिया था। अतः मेरी शरीर एवं बुद्धि दोनों ही आपकी देन है। भला ! मेरी क्या बिसात, जो मैं स्मरण भक्ति में आपके सामने टिक सकूँ।":

नारद जी ने कहा—"तुम्हें अपनी स्मरण भक्ति प्रदर्शित करनी ही पड़ेगी।" उनके हठ को प्रह्लाद टाल नहीं सके, अतः उन्होंने कहा—"भगवन् ! मंदिर में चलें। वहीं पर भगवत्स्मरण किया जाय।" दोनों मन्दिर गये। उसके साथ-साथ वह ब्राह्मण भी गया। नारद जी ने ब्राह्मण से कहा—"आप अपने धन की गठरी को सँभाल कर अपने पास रखिये। हम दोनों भगवत्स्मरण करेंगे।" ब्राह्मण ने कहा—"भगवान् ! गठरी की चिन्ता आप मत करें। इसे तो मैं अपनी गोद में लिये रहूँगा और आप लोगों के साथ भगवत्स्मरण मैं भी करूँगा।" अब नारद जी को क्या आपत्ति होती। तीनों जन भगवत्स्मरण में आँखें मूँदकर समाधिस्थ हो गये। थोड़ी देर बाद वहाँ पर धीमी आवाज आने लगी—"ये तीनों समाधिस्थ है। अतः इस ब्राह्मण की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोद में रखा हुआ बहुमूल्य रत्न हम लोग धीरे से उठाकर ले चलें।" दूसरे व्यक्ति की आवाज आयी —"हाँ, हाँ, तुम ठीक कहते हो। चलो ! धीरे से उठा लो। इसमें बड़ा धन है। अब हमें जीवनपर्यन्त चोरी करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हम लोगों को यह चिन्ता सदा सताती रहती है कि किसी समय चोरीं करते पकड़े जायगे, तो कड़ा से कड़ा दण्ड मिलेगा। आज इतना धन एक साथ प्राप्त कर हम लोग सदा के लिए चिन्तामुक्त हो जायेंगे और सम्पूर्ण जीवन परिवार सहित इस धन से विलास करेंगे।" श्री नारद जी उनकी इन बातों को सुन रहे थे। वह घबराकर सोचने लगे —'यदि इस गरीब ब्राह्मण का धन चला गया तो इसकी स्त्री तथा बच्चे मर जायेंगे। अतः उन्होंने आँखें खोल दीं और बोल पड़े —"देखिये ब्राह्मण देवता, दो चोर आपके धन की ओर ताक लगाये हुए हैं। वे अवसर पाते ही आपका धन चुरा ले जायेंगे।" "इतना कहते ही उनकी आँख ब्राह्मण के ऊपर जा टिकी। वह आश्चर्यचकित थे। यह क्या हो गया ?

उन्होंनें देखा कि ब्राह्मण के स्थान पर वह ब्राह्मण नहीं, अपितु साक्षात् भगवान विष्णु हैं और अभी भीं समाधिस्थ प्रह्लाद के ऊपर अपनी कृपा दृष्टि लगाये मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं। सामने ही भगवान शिव एवं ब्रह्मा भी खड़े हें। उनके भी वरदहस्त प्रह्लाद पर उठें हैं। भगवान विष्णु ने प्रह्लाद को इंगित कर कहा—"वत्स प्रह्लाद ! उठो। हम तीनों ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर तुम्हारे सामने खड़े हैं। आँखें खोलो। प्रह्लाद सामने त्रिदेवों का दर्शन कर उनके चरणों पर जा गिरे। तब नारद जी ने स्वीकार किया कि स्मरण भक्ति में वह प्रह्लाद के समान नहीं है। भगवान विष्णु ने कहा नारद जी, आप हमारे भक्त अवश्य हैं और निरन्तर हमारे नाम जपते रहते हैं: किन्तु स्मरण के समय आप अपने मन को नियन्त्रित नहीं कर सके। उस समय भी आपके मन में चिन्ता लगी थी कि ब्राह्मण का धन कोई चुरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न ले जाय, जब कि प्रह्लाद का चित्त केवल हमारी ओर लगा था।" नारद जी इस सत्य वचन के सामने लज्जित हो गये।

उन्हें अभी भी एक सन्देह था, जिसे उन्होंने भगवान विष्णु से पूछ ही लिया - 'भगवन्! यह तो स्पष्ट हो गया कि स्मरण भक्ति में प्रह्लाद मुझ से बढ़कर है. किन्तु वे दोनों चोर कहाँ गये, जो आपस में धन चुराने की बात कर रहे थे। भगवान विष्णु ने कहा "नारद जी, वे चोर और कोई नहीं, अपितु आप के पिता ब्रह्मा जी एवं भगवान शंकर जी हैं। ये ही आवाजें बदलकर बात कर रहे थे। वे भी यह जानना चाहते थे कि देखें, नारद जी का मन स्मरण के समय एकाग्र होता है या नहीं। भक्त प्रह्लाद के प्रति ये दोनों पहले से ही विश्वास रखते थे।" श्रीं नारद जी का अभिमान टूट चुका था।

कथा-४-चतुर्थ भक्ति का अधिकारी

नारदजी अब तक भगवान की तीन भक्तियों में असफल हो चुके थे। तृतीय भक्ति में अत्यन्त सावधान रहने पर भी सफल नहीं हो सके। पहले की तरह उनका मनोबल नहीं रहा। उन्होंने यह सोचना प्रारम्भ कर दिया कि भगवान की लीला अपार है। उनके ऐसे-ऐसे भक्त पड़े हैं, जिन्हें आसानी से जाना नहीं जा सकता। मैं भगवान की तीन भक्तियों में क्रमशः राजा जनक, श्री हनुमान जी एवं भक्त प्रह्लाद से हार चुका हूँ। इनके बारे में मुझे कुछ मालूम भी नहीं था कि मुझसे ये किसी भी भक्ति में बढ़ जायेंगे। चौथी भक्ति पादसेवन है। इसमें भी मैं स्वयं को बड़ा मानकर भूल कर सकता हूँ। वैसे मेरी दृष्टि में पादसेवन भक्ति में मुझसे चढ़कर कोई भक्त नहीं दिखाई देता। किन्तु तीनों बार यह सिद्ध हो चुका है कि मेरा विचार ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर्याप्त नहीं है। अतः चलकर अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछता हूँ, शायद उनकी दृष्टि में कोई ऐसा भक्त हो, जो पादसेवन भक्ति में अद्वितीय हो। यदि पता चल गया कि ऐसा कोई भक्त है, तो चलकर मैं उससे उनकी भक्ति का रहस्य स्वयं पूछ लूँगा।" इस प्रकार विचार कर नारद जी श्री ब्रह्माजी के पास चल पड़े।

अभी ब्रह्माजी के पास पहुँचे भी नहीं थे कि मार्ग मे भगवान श्री शिव जी मिल गये। नारद जी ने भगवान शिव को प्रणाम किया और हर्षित होकर बोले—"भगवन्, बहुत अच्छा हुआ। आज मेरा—प्रस्थान शुभागमन का सूचक मालूम पड़ता है। मैं पिता श्री ब्रह्माजी से जो बात पूछने जा रहा था, उसे आप ही से पूछ लेता हूँ। आप तो पिताजी से भी अच्छा बता सकते हैं।" नारद जी के ये वचन सुनकर भगवान शिव बोले—"नारदजी, आप मुझसे क्या पूछना चाहते हैं? पूछिये, यदि मैं सक्षम होऊँगा, तो आप की समस्या का समाधान अवश्य करूँगा।" नारद जी ने हर्षित मन से कहा—"भगवन्! भला कौन सी ऐसी बात है; जिसे आप न जानते हों? फिर भी हे अन्तर्यामी प्रभो! आपके आदेशानुसार मैं कहता हूँ - अब तक केवल तीन भक्तियों में मै असफल हुआ हूँ। किन्तु शेष छः भक्तियों में असफल नहीं होना चाहता। अब की बार चौथी भक्ति का परीक्षण है। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा हैकि चौथी भक्ति पाद सेवन में भी कोई भक्त मुझसे बढ़कर हो सकता है। तीनों लोकों एवं चौदहों भुवनों में कोई ऐसा भक्त गुप्त पड़ा होगा जो सर्वश्रेष्ठ भक्त हो सकता है। मेरे समक्ष समस्या यह है कि मैं उस भक्त को कैसे जानूँ? हे प्रभो! कृपा करके मेरी इस समस्या का समाधान आप कर दें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप ऐसे भक्त की जानकारी अवश्य रखते होंगे।"

भगवान शिवजी ने कहा—"नारदजी, ऐसे भक्त को जानने से आपको क्या लाभ होगा?" श्री नारद जी ने कहा—"भगवन्! ऐसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्त अल्पज्ञ जीवात्मा न होकर सर्वज्ञ परमात्मा रूप होते हैं। उनका दर्शन करना एवं भगवान का दर्शन करना लगभग एक-सा है। इस प्रकार के भक्त के मिलने से मुझे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि मैं उसी भक्त से पादसेवन भक्ति का रहस्य भी जान लूँगा और तुलना करूँगा कि कहाँ कहाँ पर मेरी भक्ति में कमी है। उस कमी को शीघ्र पूर्ण कर तथा उसी पद्धति से और आगे बढ़कर उस भक्त से भी बढ़ जाऊँगा।"

श्री नारद जी के ऐसे वचन सुनकर भगवान शिवजी बहुत प्रसन्न हुए और बोले—"श्री नारद जी तब तो आप पृथ्वी तल पर प्रचलित "गुरू गुड़ ही रह गया और शिष्य शक्कर (चीनी) बन गया।" लोकोक्ति को चरितार्थ करेंगे।" भगवान शिव की ऐसी वाणी सुनकर श्री नारद जी रहस्यमयी मुस्कान के साथ बोले—"प्रभो! आप भी उदाहरण देने में पूर्ण समर्थ हैं। अन्यथा ऐसा सटीक उदाहरण देना कोई साधारण बात नहीं है। अच्छा अब कृपा करके शीघ्र मुझे बतलाइये। देर मत कीजिये।" भगवान शिवजी श्री नारद जी का हाथ पकड़ते हुए बोले—"श्री नारद जी! चलियें, मैं आप को साथ में लेकर चलता हूँ राजा अम्बरीष के पास। मैंने सुना है कि पाद सेवन भक्ति में वही सर्वश्रेष्ठ है।" श्री नारद जी तुरन्त तैयार हो गये एवं दोनों तत्काल चल पड़े। चलते समय भगवान शिव ने कहा—"श्री नारद जी, राजा अम्बरीष ब्राह्मणों का बहुत बड़ा भक्त है। अतः हम दोनों दीन ब्राह्मण के रूप में उसके पास चलें। इससे वह हमारा स्वागत तो करेगा ही, दूसरे ब्राह्मण भक्ति के कारण अपने पादसेवन भक्ति के सारे रहस्य को भी बता देगा। फिर आप का कार्य बहुत आसान हो जायेगा।" श्री नारद जी तैयार हो गये। इस प्रकार ब्राह्मण वेष में भगवान शिव एवं नारदजी सीधे राजा अम्बरीष के पास गये। "पूजा के पश्चात् राजा दरबार में आयेंगे। ऐसा कहकर राज दरबारियों ने दोनों ब्राह्मणों को सम्मानपूर्वक बैठाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें बैठे-बैठे दोपहर हो गया। राजा अम्बरीष अभी पूजा पर ही थे। एक स्थान पर इतनी देर तक रुकना एवं चुप-चाप बैठे रहना नारदजी के स्वभाव एवं इच्छा के विरुद्ध था। उन्होंने ब्राह्मण रूप भगवान शिवजी से कहा—"यह राजा दिन भर पूजा ही करेगा क्या ? प्रातः काल से ही हम उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं और वह अभी तक नहीं आया। भगवान ने स्वयं कहा है कि "अतिथि के रूप में मैं स्वयं आता हूँ।" इस प्रकार अतिथि का अपमान कर भगवान का अपमान कर रहा है यह अम्बरीष ! अतः इस अयोग्य राजा को मैं पाद सेवन भक्ति मे सर्वश्रेष्ठ नहीं मानता। मैं इससे पूजा घर में ही जाकर मिलता हूँ। देखता हूँ, वहीं पर उसकी पाद सेवन भक्ति।" ऐसा कह कर श्री नारद जी उठकर तत्काल चल पडे। भगवान शिव भी उन्हें रोकने में असमर्थ पीछे पीछे चल पड़े। पूजा घर के अन्दर प्रवेश कर दोनों ब्राह्मणों ने अद्‌भुत दृश्य देखा। राजा अम्बरीष तो आसन पर आसीन हैं और भगवान विष्णु उनके चरणों की सेवा कर रहे हैं। ब्राह्मण वेषधारी नारद जी ने दाँतों तले उँगली दबाते हुए कहा— "ऐसा विपरीत कार्य ?भक्त-भगवान से ही पाद सेवन करा रहा है।" दोनों ब्राह्मण एक दूसरे का मुँह—देखने लगे। थोडी देर तक देखते रहने पर नारद जी का धैर्य जाता रहा और ब्राह्मण वेष में ही बिफर पड़े—"राजा अम्बरीष ! तुम्हें लज्जा नहीं है क्या ? अरे इतना अनर्थकारी कार्य कराते हुए तुम रसातल में क्यों नहीं चले गये ? तुम तो बड़ी शान के साथ प्रभु से ही पादसेवन करा रहे हो। वाह रे ! पादसेवन भक्ति का सर्वश्रेष्ठ भक्त।" इतना कहकर नारद जी ब्राह्मण वेष में ही थोड़ी देर तक चुप रहे। जब उन्होंने देखा कि ब्राह्मण वेषधारी भगवान शिवजी अपने दाँतों तले उँगली दबाये आश्चर्य से चकित अपनी फटी सी दृष्टि से एकटक ताक रहे हैं और कुछ बोल नहीं पा रहे हैं और राजा अम्बरीष अपने ही आराध्य देव से अपना पाद सेवन कराता जा रहा है, तब तो नारद जी का क्रोध आसमान पर पहुँच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया। कमंडलु से जल हाथ में लेकर ब्राह्मण वेषधारी नारद जी आँखें लाल किये राजा अम्बरीष को शाप देने के लिये तत्पर हो गये।

ब्राह्मण वेषधारी भगवान शिवजी ने ब्राह्मण वेषधारी नारद जी से काँपते हुए कहा -"अरे विप्र! रुक जाओ। यह वही राजा अम्बरीष है, जिसे मारने के लिये महान तपस्वी द्विजश्रेष्ठ श्री दुर्वासाजी ने कृत्या नामक राक्षसी को उत्पन्न किया था। जानते हो क्या हुआ? भगवान विष्णु के चक्र सुदर्शन ने उस कृत्या राक्षसी का वध कर भागते हुए श्री दुर्वासा का पीछा किया। श्री दुर्वासा जी तीनों लोक चौदहों भुवनों में रक्षा की माँग करते फिरे। किन्तु चक्र-सुदर्शन के समक्ष उन्हें शरण देनेवाला कोई नहीं मिला। यहाँ तक कि भगवान विष्णु भी नहीं कर सके। अन्त मे इसी राजा अम्बरीष ने चक्र सुदर्शन की प्रार्थना कर श्री दुर्वासा जी के प्राण की रक्षा की थी। उस बात को याद कर मैं काँप जाता हूँ।

इस प्रकार ब्राह्मण वेषधारी भगवान शिव के समझाने पर ब्राह्मण वेषधारी नारदजी रुक गये। राजा अम्बरीष और दुर्वासा जी की कथा नारदजी को मालूम नहीं थी। अब वे रुक गये, किन्तु भगवान विष्णु एक साधारण राजा, वह भी मनुष्य हो, उनका पाद सेवन करें। ऐसा विपरीत कार्य क्यों? ब्राह्मण वेषधारी नारदजी ने अपनी आँखें मूँदते हुए कहा -"फिर भी मैं ऐसा अभद्र कार्य अपनी आँखों से नहीं देख सकता और ब्राह्मण वेषधारी भगवान शिव को भी आँखें मूँद लेने के लिये कहा। इस प्रकार दोनों ब्राह्मण आँखें मूँद कर खड़े हो गये और तब तक का इन्तजार करने लगे जब कि राजा अम्बरीष अपनी इस विपरीत पूजा को समाप्त कर राज दरबार की ओर चले।"

किन्तु यह क्या? अभी दोनों ब्राह्मणों की आँखें मूँदे कुछ ही क्षण बीता था कि एक गम्भीर वाणी सुनाई पड़ी—'श्री नारद जी एवं महेश्वर शिव जी, आँखें खोलिये और देखिये, राजा अम्बरीष को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पादसेवन भक्ति" इस वाणी को सुनकर दोनों ब्राह्मण आश्चर्य चकित हो गये और उन्होंने यह जान लिया कि "यह भगवान विष्णु की ही वाणी है। क्योंकि हम दोनों के वास्तविक रूप एवं नाम को जानने में केवल भगवान विष्णु ही समर्थ हैं।" इस प्रकार विचार कर अपने वास्तविक रूप में आकर दोनों ने आँखें खोल दी। आगे का दृश्य देखकर दोनों ही अति आश्चर्य में आ गये। अत्यन्त अद्भुत दृश्य था। वे देखते हैं कि भगवान विष्णु शंख, चक्र, गदा एवं पद्म धारण किये अपने वास्तविक चतुर्भुज रूप में आसन पर आसीन हैं और राजा अम्बरीष उनका पाद सेवन कर रहे हैं।

नारद जी एवं भगवान शिव ने सिर झुकाकर भगवान विष्णु को प्रणाम किया। हाथ जोड़कर नारद जी ने कहा—"प्रभु विष्णु! आप की लीला को कौन जान सकता है। अभी कुछ क्षण पूर्ण हमने क्या देखा और अब क्या देख रहे हैं। हे दीन बन्धो! अभी तक मैं यह नहीं समझ पाया कि आखिर इससे पहिले आप स्वयं राजा अम्बरीष का पाद सेवन कर रहे थे तथा कुछ ही क्षण बाद यह राजा अम्बरीष आप के पाद का सेवन कर रहा है। आखिर यह क्या है? कृपा करके मेरे इस सन्देह को दूर कीजिये।" भगवान विष्णु ने गम्भीर वाणी में कहा—'हे नारद! आप भक्तराज अम्बरीष को पहचान नहीं पाये। सुनिये, जिस समय राजा अम्बरीष मेरी भक्ति में लीन हो पाद सेवन करता है, उस समय उसके हृदय में मेरे अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु नहीं रहती। वह मेरा पाद सेवन करते समय मेरे इस रूप का ध्यान कर मग्न हो जाता है। ऐसी अवस्था में मैं अपने इस सर्वश्रेष्ठ भक्त को अपने हृदय में धारण कर इसका रूप हो जाता हूँ। इस प्रकार इसके पाद सेवन के समय इसके रूप में मैं हो जाता हूँ और यह मेरे रूप में हो जाता है। यह मेरी भक्ति में इतना डूब जाता है कि इसे पता ही नहीं चलता कि इसके स्थान पर मैं अपने रूप में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपस्थित हूँ। यही मेरी सारूप्य भक्ति है। ऐसे भक्तों को मैं शरीर छोडने पर साहूप्य मुक्ति प्रदान करता हूँ। राजा अम्बरीष पाद सवन भक्ति का वास्तविक अधिकारी है। अतः इसे मैं सारूप्य मुक्ति प्रदान करूँगा।" इतना कहकर भगवान विष्णु ने राजा अम्बरीष को सकेत कर कहा—'भक्त अम्बरीष! देखो, तुम्हारी पाद सेवन भक्ति की परीक्षा के लिए नारद जी एवं भगवान शिव आये हैं।" इतना सुनते ही राजा अम्बरीष उठकर दौड़े और जाकर नारदजी एवं भगवान शिव को साष्टांग प्रणाम के लिए उनके चरणों पर लोट गये। भक्तराज अम्बरीष की ऐसी विनम्रता एवं भक्ति को देखकर नारद जी ने उन्हें उठाकर गले लगा लिया। प्रेमाश्रु बहाते हुए नारद जी ने गद्गद् वाणी में कहा—"भक्तराज, आज मैंनें अपनी आँखों से देख लिया कि तुम भगवान विष्णु के पाद सेवन में इतने लीन हो जाते हो कि प्रभु को तुम्हारा रूप धारण करना पड़ जाता है एवं तुम उनके रूप में हो जाते हो। धन्य हो भक्त राज! आज मैंने यह मान लिया एवं आँखों से देख लिया कि पाद सेवन भक्ति में तुम सर्वश्रेष्ठ हो।" भगवान शिवजी ने भी भक्त अम्बरीष को गले लगाकर कृतार्थ किया।

कथा-५-पञ्चम भक्ति का अधिकारी

चतुर्थ भक्ति पाद सेवन में असफल होने के पश्चात् श्री नरादजी वापस आ तो गये, किन्तु बहुत अधिक बेचैन हो गये। उनके मन में बड़ा ही उथल-पुथल था। अनेकों विचारों से उनका मन आन्दोलित था। आज वे सोचते थे—"मैंने क्या सोचा था और क्या हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहाँ तो मैं भगवान की नवों भक्तियों में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानता था और कहाँ चार भक्तियों में असफल हो गया। अब पाँच भक्ति और शेष है। मैं क्या करूँ क्या न करूँ ? पिता ब्रह्मा जी एव भगवान शिवजी से अब कुछ भी पूछना व्यर्थ है। ये लोग मेरी असफलता पर मन ही मन हँसते होंगे। भगवान विष्णु के पास यदि चलूँ, तो वे भी अन्यमनस्क होकर यही सोचेंगे कि श्री नारद जी में भक्ति की श्रेष्ठता नहीं है। फिर भी अनायास परेशान हो रहे हैं। पाँचवी भक्ति है अर्चन। कौन ऐसा भक्त होगा, जो अर्चन में सर्वश्रेष्ठ हो। वैसे तो मैं तीनों लोकों में भ्रमण करता रहता हूँ, किन्तु सम्पूर्ण देवी एवं देवताओं के छिद्रान्वेषण में और उनके बीच कलह कराने में ही अब तक मेरा सारा समय वीतता रहा। कौन सा भक्त भगवान की भक्ति में लगा हुआ है और कौन सी भक्ति में वह सर्वश्रेष्ठ है ? इसे जानने की तरफ मेरा ध्यान ही नहीं गया। जब से मेरे सामने यह समस्या आयी है, तब से मैं इसी कार्य में लगा हुआ हूँ। इससे पहले तो मैं स्वय को ही सम्पूर्ण भक्तियों में सर्वश्रेष्ठ निर्विवाद रूप से मानता रहा। मुझे क्या पता था कि राजा जनक, श्री हनुमान जी प्रह्लाद जी एवं राजा अम्बरीष जैसे भक्त भी मुझसे कहीं आगे हैं। इस भक्ति परीक्षण में मेरा भ्रम तो टूट गया है। अब आगे के बारे में सोचना बुद्धिमानी हैं। पाँचवी अर्चन भक्ति के बारे में कहीं अन्यत्र अपनी हँसी न कराकर सीधे भगवान विष्णु के पास चलूँ।" ऐसा सोचकर श्री नारद चलने को तैयार हो गये।

उसी समय श्री ब्रह्मा जी आ गये। श्री नारद जी को पिता ब्रह्मा का आना अच्छा नहीं लगा। वह तो श्री ब्रह्मा जी और भगवान शिवजी को बिना बताये ही जाना चाहते थे। सम्पूर्ण शुभाशुभ के जन्मदाता सृष्टि के रचयिता श्री नारद जी के साक्षात् पिता श्री ब्रह्मा जी आज श्री नारद जी को अशुभ सूचक दिखलाई पड़े। उनका मन पिता श्री ब्रह्माजी को देखकर खिन्न हो उठा। अभी वह इस ऊहापोह में पड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही थे कि श्री ब्रह्माजी बोल उठे—"वत्स नारद ! अब तो तुम्हें विश्वास हो गया कि तुम से बढ़कर बहुत से भक्त पड़े हुए हैं। मेरा विचार है कि अब अपना और अपमान मत कराओ। रहने दो परीक्षण आगे पाँचों भक्तियों का।" श्री ब्रह्माजी का एक-एक अक्षर श्री नारदजी को काँटे की तरह चुभ रहा था। वह उन्हें अपने गन्तव्य स्थान को बतलाना नहीं चाहते थे। अतः बात टालते हुए बोले—"पिता जी, मैं अभी एक आवश्यक कार्य से एक स्थान पर आ रहा हूँ। कहाँ जा रहा हूँ यह बात मुझसे मत पूछियेगा और आप जाकर अपना अन्य कार्य देखिये। कार्य करके जब मैं वापस आ जाऊँ, तब आकर अपना उपदेश दीजियेगा।" ऐसा कहकर श्रीनारदजी वहाँ से तत्काल चल पड़े। श्री ब्रह्माजी उनसे और कुछ कहना चाहकर भी कह न सके।

श्री नारद जी वीणा बजाते हरि गुण गाते हुए चले जा रहे थे। रास्ते में उन्हें भगवान शिवजी दिखाई पड़े। श्री नारद जी भगवान शिव जी को भी अपना गन्तव्य स्थान बतलाना नहीं चाहते थे। अतः रास्ता बदल कर आगे बढ़ गये। भगवान शिवजी मुसकरा कर रह गये। श्री नारदजी सीधे क्षीरसागर में भगवान विष्णु के पास जा पहुँचे। भगवान विष्णु शेषनाग की शय्या पर शयन कर रहे थे। श्री लक्ष्मीजी उनके चरणों को दबा रही थीं। श्रीनारदजी ने भगवान विष्णु एवं श्री लक्ष्मीजी को प्रणाम किया। भगवान विष्णु ने श्री नारद जी का स्वागत करते हुए पूछा—"महर्षे ! आज आप के आगमन का क्या उद्देश्य है ?" श्रीनारद जी ने कुछ हिचकिचाते हुए कहा—"भगवन् ! आप तो सब कुछ जान रहे हैं। फिर भी आप के पूछने पर मैं निवेदन कर रहा हूँ। अब तक चार भक्तियों में मुझसे बढ़-बढ़कर आपके भक्त निकल आये हैं यह भी एक विचित्र बात है - कि इन लोगों को मैं पहले से ही जानता था, किन्तु आप की भक्ति में ये मुझसे बढ़कर हैं, यह तो मैं ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। उसी प्रकार से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंचम भक्ति अर्चन में कौन सर्वश्रेष्ठ है ? कृपा कर के मुझे आप यह बतला दें। भगवान विष्णु श्री नारद जी की व्यग्रता देखकर मन ही मन मुस्कुराते हुए गम्भीर वाणी में बोले—"श्री नारद जी, इसका निर्णय मृत्यु लोक की मथुरा नगरी में निवास करनेवाले सुदामा नाम के एक माली के पास हो सकेगा।" श्री नारदजी आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने कहा—"भगवन्! यह नाम तो आज मैं पहली बार सुन रहा हूँ। अब तक की चार भक्तियों के सर्वश्रेष्ठ भक्तों को तो सब जानते हैं। केवल उनकी भक्ति की श्रेष्ठता को नहीं जानते। किन्तु पाँचवीं (अर्चन) भक्ति का अधिकारी एक साधारण माली हो सकता हैं, यह तो महान आश्चर्य का विषय है। फिर भी जब साक्षात् आप ही कह रहे हैं, तो उसकी भक्ति को देखकर ही जाना जा सकता है कि अर्चन भक्ति में वह किस प्रकार सर्वश्रेष्ठ है। चलिये। मैं अभी चलने को तैयार हूँ।" दोनों तत्काल चल पड़े।

मथुरा नगरी के समीप पहुँचने पर भगवान विष्णु ने श्रीनारद जी से कहा—"नारद जी! हम लोग एक माली के पास चल रहे हैं। वहाँ चलने के लिये हमें अनुकूल वेष-भूषा में चलना चाहिये। पहली बात तो यह है कि सुदामा माली बेचारा बड़ा गरीब है। अतः उसे कुछ धन देना चाहिये। दूसरी बात यह कि वह वैष्णव है। वैष्णवों को ब्राह्मण बहुत प्रिय होते हैं वह ब्राह्मणों का आदर सत्कार करता है। अतः हम लोग ब्राह्मण वेष में उसके पास चलें।" श्री नारद जी ने दोनों बातों को स्वीकार करते हुए प्रश्न किया—"भगवन्! ब्राह्मण तो हम लोग बन जायेंगे, किन्तु जो धन उसे देना है, वह कहाँ से प्राप्त होगा?" भगवान विष्णु ने कहा—"यह बात मैंने पहले ही सोच लिया है। चलकर राजा कंस से माँगते हैं। वह भी ब्राह्मणों का बहुत आदर करता है।" श्री नारद जी ने इसे भी स्वीकार कर लिया और दोनों ब्राह्मण वेष बनाकर महाराज कंस के दरबार में जा पहुँचे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वारपाल के माध्यम से दोनों महाराज कंस के सामने उपस्थित हुए। महाराज कंस ने दोनों ब्राह्मणों से आने का कारण पूछा। ब्राह्मण रूपधारी भगवान विष्णु ने कहा—"महाराज, हम आप के दरबार में एक याचक के रूप में आये हैं। हमें कुछ धन चाहिये।" महाराज कंस ने अपने कोषागार से एक लाख स्वर्णमुद्रा मगाकर दे दिया। दोनों ब्राह्मण महाराज कंस की जय-जयकार करते हुए वहाँ से चले गये और सीधे सुदामा माली के घर जा पहुँचे। सुदामा माली उस समय घर पर नहीं था। उसकी पत्नी थी। पूछने पर उसने बताया कि उसके पति माला बनाने के लिये फुलवारी में फूल तोड़ने गये हैं। दोनों ब्राह्मण फुलवारी जा पहुँचे। जाकर देखते हैं कि फुलवारी में एक व्यक्ति बायें हाथ से फूल तोड़ रहा है और दाहिन हाथ में वह तलवार ताने हुए है। वह सुदामा माली ही था। तलवार को ऐसी मुद्रा में लिये हुए उस माली को देखकर दोनों ब्राह्मण आश्चर्यचकित हो गये। ऐसा मालूम पड़ रहा था जैसे वह किसी को मारने को तैयार है। आश्चर्य युक्त ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने कहा—"भाई! यहाँ कोई सुदामा नामक माली है क्या?" उस व्यक्ति ने अपना सिर ऊपर किया और दो ब्राह्मणों को सामने देखकर क्रोध से लाल हो गया। प्रचण्ड रोष में बोला वह। "क्या है? कौन हो तुम लोग? मेरा नाम ही सुदामा माली है। नहीं जानते हो क्या? मैं ब्राह्मणों को फूटी आँख भी देखना नही चाहता। अगर कुशल चाहते हो तो यहाँ से चले जाओ। मैं तुम लोगों से बात नही करना चाहता।" ब्राह्मण वेषधारी श्री विष्णु भगवान बोले "भाई! हम तुम्हारे लिये कुछ भेंट लाये हैं। उसे स्वीकार कर लो।" ऐसा कहकर धन का झोला उसके सामने रख दिया। ब्राह्मण वेषधारी श्री नारद जी ने धीरे से कहा—"भगवन! यह तो ब्राह्मण द्रोही है और ब्राह्मण द्रोही आप का द्रोही है। यह आप की अर्चन भक्ति क्या करेगा? चलिये यहाँ से हम लोग वापस लौट चलें। झोले को धीरे से उठा लीजिये। ऐसे कुपात्र व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को धन देना उचित नहीं है।" तब तक वह माली समीप आ गया। उसने तड़पते हुए कहा--"तुम लोगों ने सुना नहीं क्या ? तुम लोग सोच रहे होंगे कि तुम्हारी इस भेंट से मैं प्रसन्न हो जाऊँगा। ले जाओ अपनी स्वर्ण मुद्रा। मुझे इसकी कोई आवश्यकता नहीं। ऐसा कहकर उसने अपने बायें हाथ से झोले को उठाया और ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु के पास फेंक दिया। फेंकते ही सम्पूर्ण स्वर्णमुद्रा भरभरा कर गिर पड़ी। दोनों ब्राह्मण देख रहे थे कि शायद वह सोना देखकर ठंडा पड़ जाय। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। वह तो स्वर्ण मुद्रा देखकर क्रोध से और लाल पीला हो गया। फटकारते हुए उसने कहा —"तुम लोग सोचते होगे कि तुम्हारी दी हुई स्वर्ण मुद्रा को पाकर मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा। यह कभी नहीं हो सकता। उठाओ अपनी मुद्रा और तुरन्त चले जाओ। मुझे ब्राह्मणों को देखते ही क्रोध आ जाता है।" ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने थोड़ा डरते हुए कहा -"अरे भाई! आखिर क्या बात है कि आप ब्राह्मणो से नाराज हैं ?" सुदामा माली ने क्रोध से होठ फड़काते हुए कहा -"तुम लोगों को बताने से मुझे क्या लाभ है ? फिर भी मैं बता देता हूँ। मेरे परम प्रभु विष्णु भगवान के वक्षस्थल में ब्राह्मण भृगु ने अनायास ही पैर से मार दिया था। जब मैं विष्णु भगवान के अवतार वासुदेव श्रीकृष्ण की अर्चना करता हूँ तो वह मेरे सामने खड़े हो जाते हैं। उनके वक्षस्थल पर भृगु के पैर का चिन्ह देखता हूँ मैं। ब्राह्मण भृगु की ऐसी धृष्टता का ख्याल आते ही मेरी भृकुटी चढ़ जाती है। ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने कहा 'भक्तराज! केवल एक ब्राह्मण के कृत्य से आप सभी ब्राह्मणों पर क्यों क्रोधित हो जाते हैं ?" सुदामा माली ने कहा – "एक ही नहीं एक दूसरे भी ब्राह्मण महर्षि हैं! उन्हें भी कुछ नहीं सूझा। मेरे परम प्रभु को उन्होंने अनायास ही शाप दे दिया था।" ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने पूछा—"कौन है वह दूसरा ब्राह्मण ? और शाप क्या दिया था ?" सुदामा माली ने होठ फड़फड़ाते हुए कहा—"वह हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीनारद जी ! उन्होंने क्यों शाप दिया था ? इसे जानना चाहते हो तुम लोग ? आज मैं बता ही देता हूँ तुम लोगों को। ध्यान लगाकर सुनो— विश्व विमोहिनी के मोह में पड़कर श्रीनारद जी ने मेरे परम प्रभु को शाप दे दिया था कि—"नारी से तुमने मुझे प्रवंचित किया है। सो तुम भी नारी वियोग में तड़पोगे और जो बन्दर का मुँह मेरा बनाकर तुमने मुझे कुरूप कर दिया था, वही बन्दर तुम्हारी सहायता करेंगे। रामावतार में मेरे परम प्रभु को इस शाप का फल भोगना पड़ा था। तुम्हीं लोग विचार करो कि श्री नारद जी कहाँ तो गये थे उस लड़की का हाथ देखने और उसे देखते ही हाथ देखना भूल गये। लगे अपना मंसूबा बाँधने कि किस प्रकार से मेरा विवाह इस सुन्दरी से हो जाय ? सहायता के लिये परम प्रभु के पास गये कि वह अपना रूप इन्हें दे दें ! जिससे विश्व विमोहिनी उन्हीं का वरण करे। काम से पीड़ित नारदजी का कल्याण करने के लिये परम प्रभु ने उनका मुँह बन्दर का कर दिया। तो इसमें क्या बुरा किया ? किन्तु श्री नारदजी इतने क्रोधित हुए कि परम प्रभु को खोजते हुए गये। जब रास्ते में वह मिल गये, तो तत्काल उन्होंने शाप दे दिया। परम प्रभु इतने क्षमाशील हैं कि उनका शाप उन्होंने अंगीकार कर लिया। इस बारे में जब मुझे पता चला तभी से मैं श्री नारद जी को भी खोज कर रहा हूँ। मिलते ही उनका काम तमाम कर दूँगा।"

ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने कहा —"हे सुदामा माली ! तलवार तो तुम्हारी कमर में भी बँधी रह सकती है। फिर अपने दाहिने हाथ में सजी हुई तलवार क्यों लिये रहते हो ? इससे तो तुम्हारा हाथ पीड़ा करता होगा।" सुदामा माली ने रोष भरे स्वर में कहा— "अरे, इस तलवार को सजी हुई मैं इस लिये रखता हूँ जिससे इन निर्दयी ब्राह्मणों के मिलने पर मुझे उन्हें मारने में देर न लगे। ज्यों ही सामने देखूँ तुरन्त काटकर रख दूँ। पीड़ा का तो कोई प्रश्न ही नहीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुदामा माली की बात सुनकर ब्राह्मण वेषधारी श्री नारद जी काँपने लगे। उन्होंने ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु से धीरे से कहा "भगवन्! यह तो मुझ ही खोज रहा है। कहीं मुझे पहचान लिया, तो अनर्थ हो जायेगा। यह तो मुझे तत्काल मौत के घाट उतार देगा। चलिये यहाँ से शीघ्रातिशीघ्र। आप भी गजब की बात करते हैं। भला यह प्रचण्ड क्रोधी आप की अर्चन भक्ति का अधिकारी कैसे हो सकता है ?" ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने कहा—'श्रीनारद जी, आप घबराइये नहीं। आप के बारे में यह जानेगा कैसे ? मैं बताऊँगा नहीं। और आप स्वयं बतायेंगे कैसे ? अब आय हैं तो इसकी अर्चन भक्ति देखकर चलें। श्री नारद जी यद्यपि बेहद घबरा गये थे फिर भी भगवान के आश्वासन से कुछ आश्वस्त होकर सिट-पिटाये हुए चुप रह गये। दोनों ब्राह्मणों को आपस में कुछ खुसर फुसर करते हुए देखकर सुदामा माली ने कहा—"तुम लोग आपस में क्या बात कर रहे हो ?" ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने कहा—"कुछ नहीं। हम लोग आप की प्रशंसा कर रहे हैं। एक बात है सुदामा भाईजी, ब्राह्मण का वध करने से ब्रह्महत्या का महापाप लगेगा। अतः आप से मेरा अनुरोध है कि आप ब्राह्मण वध का विचार त्याग दें। अन्यथा ब्रह्महत्या के कारण आपकी प्रतिष्ठा तो नष्ट होगी ही, साथ ही भयंकर नरक यातना भी भोगनी पड़ेगी।" यह सुनकर और अधिक आवेश में आकर सुदामा माली ने कहा- "तुम लोगों को इससे क्या लेनादेना। मुझे एक या दो ब्रह्महत्या नहीं अपितु हजारों ब्रह्म-हत्या का पाप लगे, भयंकर नरक की यातना क्या, महायातना भोगनी पड़े तो भी मैं इन दो ब्राह्मणों का वध किये विना मान नहीं सकता। भला इन दोनों ने परम प्रभु के साथ इतनी ज्यादती क्यों किया ?" अब दोनों विप्रों के पास चुप रहन के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं रहा सुदामा माली ने ऊर्ध्व श्वांस लेते हुए कहा—"तुम लोग अब यहाँ से भाग जाओ। मुझे भगवान की अर्चना करनी है।" ब्राह्मण वेषधारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान विष्णु ने कहा—"हे भाई ! हम लोग भी भगवान की अर्चना करेंगे। अर्चना के बाद हम लोग चले जायेंगे ।" ब्राह्मणों के मुँह से यह बात सुनकर कि वे भी भगवान की अर्चना करेंगे, सुदामा ने शर्त रख दिया देखो, यदि तुम लोग इन दो विप्रों भृगु एवं नारद को अर्चना के बाद यहाँ तक लाने का वादा करो तो मेरे साथ अर्चना कर सकते हो।" श्री नारदजी काँपने लगे। धीरे से उन्होंने ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु से कहा—'भगवन् ! यहाँ से शीघ्र चलिये। कहीं आप ने इसे यह वचन दे दिया तो मैं कहीं का नहीं रहूँगा। यह मेरा तत्काल वध कर देगा और आप कुछ नहीं कर पायेंगे।" ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने श्रीनारद जी के हाथ की ऊँगली दबाते हुए धैर्य धराया और धीरे से कहा—"सब ठीक हो जायेगा। आप निश्चिन्त रहिये।" इस प्रकार श्रीनारद जी को आश्वस्त कर उन्होंने सुदामा माली की शर्त स्वीकार कर लिया। सुदामा माली बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"तुम लोग तो भगवान के बड़े भक्त मालूम पड़ते हो। चलो भगवान की अर्चना कर लो। अर्चना का समय हो चुका है।" इस प्रकार तीनों व्यक्ति भगवान श्रीकृष्ण के मन्दिर में आकर अर्चना की तैयारी में लग गये। मन्दिर में भगवान वासुदेव की मूर्ति विराजमान थी। अलग-अलग सामग्री रखकर अर्चन करने लगे।

दाहिने हाथ में तलवार उठाये रहने से सुदामा माली अपने बायें हाथ से फल-माला, धूप दीप आदि पूजन सामग्री को भगवान वासुदेव की मूर्ति पर समर्पित करने लगा। एक सामग्री चढ़ाकर चारों तरफ देख लिया। दूसरी चढ़ाकर पुनः चारों तरफ देख लिया। इस प्रकार जितनी बार वह कोई सामग्री चढ़ाता, उतनी बार चारो तरफ देख लिया करता था। विद्याविहीन होने से वह सामग्री चढ़ाते समय वैदिक मन्त्र का उच्चारण नहीं कर रहा था। ब्राह्मण वेषधारी श्री नारद जी खिन्न होकर ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु से बोले "भग-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वन् ! देखिये इसकी अर्चन भक्ति। पहली बात तो यह है कि आप का पूजन यह बायें हाथ से कर रहा है और दूसरी बात यह कि हर सामग्री चढ़ाने के बाद यह चारों तरफ देखता है। इसका मन कितना चंचल है। तीसरी बात यह कि पूजन सामग्री को बिना वैदिक मन्त्र उच्चारण किये ही चढ़ा रहा है। यह कैसा भक्त है आप का ? आप इसकी अर्चा को कैसे ग्रहण करेंगे ?" ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु कोई उत्तर नहीं दिये। वह अर्चन में ही लगे रहे। श्री नारद जी पुनः वैदिक मन्त्रों द्वारा अर्चन सामग्री समर्पित करने लगे।

सुदामा माली ने संपूर्ण अर्चन सामग्री भगवान को समर्पित कर दिया श्री नारद जी ने देखा कि सुदामा माली किसी भी प्रकार से शुद्ध अर्चना नहीं किया, अपितु अर्चन के समय में चारों तरफ देखता रहा। इसी समय एक अद्भुत घटना घट गई। सहसा सुदामा माली फूट-फूटकर रोने लगा। श्री नारद जी उसका रोना देखकर घबरा गये। दयालु श्री नारद जी किसी दुःखी को देखकर दुःखी हो जाते है। सुदामा माली सम्पूर्ण सामग्री समर्पित कर चुका था। दाहिने हाथ में सजी हुई तलवार वह लिये हुए था। रोते हुए गद्‌गद् कंठ से कह रहा था—"हे परम प्रभु ! आप ने इन ब्राह्मणों का अत्याचार क्यों सहन किया ? आपने सहन कर लिया, किन्तु आप के इस अपमान को मैं सहन नहीं कर सकता। हे परम प्रभु ! मेरी एक ही प्रार्थना है कि उन दोनों अत्याचारी ब्राह्मणों को मेरे सामने रख दीजिये। मैं अपनी इसी तलवार से उनका वध कर दूँगा। उसके बाद मुझे जो दण्ड देंगे, मैं सब सहने को एवं भोगने को तैयार हूँ। कितना समय हो गया, सजी हुई तलवार लिये मैं उन ब्राह्मणों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। किन्तु वे मुझे आज तक नहीं मिले। मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? मुझे कुछ सूझता नहीं।" इस प्रकार कहते हुए सुदामा माली भगवान के चरणों पर सिर रखकर फूट-फूट कर रोने लगा। श्री नारद जी उसके इस भाव को सुनकर बहुत घबरा गये। उनकी दयालुता कापूर हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गयी। ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु की ओर यह सोचकर मुड़े कि उनसे कहकर यहाँ से तत्काल भाग चलें। किन्तु वह क्या ? ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु अपने स्थान पर थे नहीं। इधर उधर उन्होंने देखा, किंतु भगवान कहीं नहीं दिखाई पड़े। इसी समय वह देखते हैं कि वह अपने वास्तविक रूप में आ गये हैं। अब तो श्री नारद जी बेहद घबरा गये। उनका सारा शरीर काँपने लगा। वह सोचते जा रहे थे कि —"सुदामा माली जैसे ही भगवान के चरणों पर से उठेगा, तत्काल मुझे मौत के घाट उतार देगा। अब तक तो मैं ब्राह्मण रूप में था। वह मुझे पहचान नहीं पाया था। भगवान विष्णु ने मेरे साथ धोखा किया। मेरा वास्तविक रूप देकर स्वयं गायब हो गये अब मैं यहाँ से तत्काल भागकर अपना प्राण बचाऊँ।" ऐसा सोचकर वह भागने के लिये उठ खड़े हुए। जैसे ही वह पीछे मुड़ते है तो देखते है कि ब्रह्माजी सामने खड़े हैं और उन्होंने श्री नारद जी को पकड़ लिया। बोले —"वत्स नारद ! तुम यहाँ से नहीं जा सकते। अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा। अब मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। उधर देखो भृगु को भी भगवान शिवजी पकडकर खड़े है।" भृगु जी को ऐसी अवस्था में देख कर श्री नारद जी की रही सही आशा भी नष्ट हो गयी। उन्होने सोचा कि अब हम दोनों की मौत निश्चित है। घबराहट से श्री नारदजी की घिग्घी बंध गयी। वह न तो बोल पा रहे थे और न ही भाग पा रहे थे। आज अपने पिता ब्रह्माजी उन्हें यमराज के दूत नजर आ रहे थे। उन्होंने उन्हें भागने क्यों नहीं दिया ?

अत्यन्त भयभीत उन्होंने सुदामा माली की ओर देखा। सामने का दृश्य अद्भुत था। सुदामा माली भगवान वासुदेव के चरणों पर गिरा फूट-फूट कर रो रहा था। ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु वासुदेव की मूर्ति में प्रवेश कर साक्षात वासुदेव श्रीकृष्ण रूप में आकर सुदामा माली को उठा रहे हैं। उसको उठाते हुए भगवान वासुदेव ने गम्भीर वाणी में कहा—"भक्तराज !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम मुझे बहुत प्रिय हो।" वह उठकर खड़ा हुआ। उसके दाहिने हाथ में तलवार अभी भी सजी हुई थी। देखता है—साक्षात वासुदेव श्री कृष्ण मूर्ति में स प्रकट हुए हैं। मन्द-मन्द मुस्कुराहट के साथ अपने परम प्रभु को सामने देखकर सुदामा हर्ष से विभोर हो गया। प्रमाश्रु धारा बह निकली। भगवान वासदेव ने उसे समझाते हुए कहा 'भक्त सुदामा, तुम मेरे परम प्रिय हो। मेरे दुःख या अपमान को न सहते हुए तुम श्री नारद जी एवं महर्षि भृगु को मारना चाहते हो। सुनो, मैं तुम्हारा भ्रम दूर कर देता हूँ। देखो मेरे हृदय में आज भी महर्षि भृगु का चरण चिह्न विराजमान है। तुम जिस प्रकार से मुझे प्रिय हो, उसी प्रकार मे महर्षि भृगु एवं श्री नारद जी भी मुझे प्रिय हैं। वैसे सम्पूर्ण ब्राह्मण मुझे प्रिय हैं। तुम समझ लो कि पृथ्वी पर मैं ही ब्राह्मण के रूप में विचरण करता हूँ। मृत्यु लोक मे जो भी व्यक्ति ब्राह्मण को प्रणाम करता हैं, वही मेरा भक्त है। मैं उसकी हर कामना पूर्ण करता हूँ। ब्राह्मण से द्रोह करनेवाले का मैं समूल नाश कर देता हूँ। ब्राह्मण द्रोही मेरा द्रोही है। भक्त राज सुदामा तुम मेरे लिये ब्रह्महत्या जैसा पाप कर उसके दण्ड को भोगने के लिए तैयार हो, इससे मैं तुम्हें अनन्य भक्त मानता हूँ। किन्तु अत्यन्त भोले होने के कारण तुम मेरे दूसरे पहलू को समझ नहीं पाये। सो मैं तुम्हें बता देता हूँ। देखो, मृत्यु लोक के ब्राह्मण मुझे प्राणों से भी प्रिय हैं। तुम जो यह सोचते हो कि महर्षि भृगु और श्री नारद जी ने मुझे पीड़ा पहुँचाया या अपमान किया, यह तुम्हारा भ्रम है। आज मैं तुम्हारे इस भ्रम का निवारण कर देता हूँ। महर्षि भृगु ने जो मेरे वक्षस्थल पर पैर मारा, वह तो उन्हें करना पड़ा था। उसी के माध्यम से देवताओं में उत्पन्न शंका का निवारण हुआ। ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव में कौन बड़ा है? इसका समाधान पाने के लिए ही भृगु जी ने ऐसा आचरण किया था। यह कार्य भी ब्रह्मा, शिव एवं मेरा यश फैलाने के लिये ही तो किया उन्होंने? और श्री नारदजी ने जो कामवशीभूत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर मुझे शाप दिया था, वह भी मेरी इच्छा से हुआ था। मेरी माया की नगरी, माया के शीलनिधि राजा और माया की विश्व विमोहिनी राजकुमारी श्रीनारदजी के कामजयी अभिमान को दूर करने के लिये मैंने ही इन सब की रचना का आदेश दिया था। फिर बेचारे नारद जी का क्या दोष ?" इतना सुनते ही भक्त सुदामा की तलवार हाथ से छूटकर गिर पड़ी। वह दोनों हाथ जोड़ भगवान के चरणों में गिर पड़ा और रूंध स्वर में कहने लगा "हे मेरे परम प्रभु ! अब तो मुझे इन दोनों ब्राह्मणों से मिला दीजिये। मैं उनसे क्षमा मागूँगा। जब तक वे मझ क्षमा नहीं करेंगे, मैं उनके चरणों को नहीं छोड़ूँगा।" भगवान वासुदेव ने सुदामा को उठाते हुए सामने उपस्थित महर्षि भृगु एवं श्रीनारदजी को दिखलाया।

सुदामा माली दोनों ब्राह्मणों के चरणों पर गिर पड़ा। रो रो कर कहने लगा—"हे मेरे परम प्रभु के प्रिय पात्रों ! मुझे क्षमा कर दीजिये। मैं आप लोगों की महिमा जानता ही नहीं था। आज मेरे परम प्रभु ने ही आप लोगों की महिमा को बता दिया। तब मैं आप लोगों को जान सका।" दोनों ब्राह्मणों ने सुदामा माली को उठाकर गले लगा लिया और बोले—"तुम तो हमारे भ्राता हो।" सुदामा माली ने भगवान शिव एवं भगवान ब्रह्मा का दर्शन किया एवं दण्ड के समान गिरकर उन्हें प्रणाम किया। भगवान नारद जी ने सुदामा माली को अर्चन भक्ति का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी मानते हुए कहा—"भक्तराज सुदामा, तुम धन्य हो। तुमने अपनी अर्चा भक्ति से भगवान कृष्ण को मूर्ति में आहूत कर लिया। भगवान को मूर्ति में से प्रकट होकर तुम्हारे ऊपर कृपा करना पड़ा।" अन्त में श्री नारदजी ने भगवान से प्रार्थना किया—"भगवन् ! एक बात मेरी समझ में नहीं आई। वह यह कि सुदामा माली आपकी अर्चना बिना वैदिक मन्त्र के करता है एवं बायें हाथ से करता आया है। ऐसी अवस्था में आप उसकी पूजा कैसे स्वीकार करते हैं ?" भगवान वासुदेव श्री कृष्ण ने मुस्कुराते हुए कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारदजी यह कोई सरल बात नहीं है। इसमें बहुत बडा रहस्य छिपा हुआ है। फिर भी मैं आप को बता देता हूँ। देखिये, मैं भक्त के भाव को देखता हूँ, क्रियाविधि नहीं।" श्री नारद जी ने कहा—"धन्य हो भक्तपालक।"

कथा—६--षष्ठ भक्ति का अधिकारी

देवर्षि नारदजी लगातार पाँच भक्तियों में असफल होते आये थे। अब उन्हें असफलता से आश्चर्य कम होने लगा था, किन्तु जिज्ञासा अधिक जागृत हो चुकी थी कि देखें अब कौन भक्त श्रेष्ठ निकल सकता है। यह तो उन्हें अति विचित्र लगा कि एक साधारण माली पञ्चम भक्ति में उनसे आगे निकल गया था। अतः षष्ठ भक्ति "वन्दन" के बारे में वह गम्भीरता से विचार करने लगे। उन्होने विचार किया कि "षष्ठ भक्ति" में मेरा सारा समय बीतता है। मेरे बीणा के तार भगवान की वन्दना में ही अधिक प्रयुक्त होते हैं। एक बार मैंने भगवान से पूछा था कि भगवान आप कहाँ निवास करते हैं। तो उन्होंने बताया था—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न वै।
मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

"हे नारदजी, मैं वैकुण्ठ में निवास नहीं करता। योगियों के हृदय में भी निवास नहीं करता। मेरे भक्त जहाँ मेरा गुणगान करते हैं, मैं वहीं रहता हूँ" इस प्रकार बीणा बजाते हुए सदैव मैं भगवान की वन्दना ही किया करता हूँ ध्यान से देखा जाय, तो षष्ठ भक्ति में मुझ से बढ़कर किसी को नहीं होना चाहिये। फिर भी मुझे इसमें भी परीक्षण तो करना ही पड़ेगा। अब प्रश्न यह उठता है कि षष्ठ भक्ति के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी का पता कैसे लगे। पिता ब्रह्माजी एवं भगवान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिवजी तो इसी प्रतीक्षा में होंगे कि देखें श्री नारदजी अब की बार कहाँ जाते हैं ? उधर भगवान विष्णु भी इसी ताक में होंगे कि श्री नारदजी विवश होकर मेरे ही पास आवेंगे। अब मैं क्या करूँ, क्या न करूँ ? एक बात अभी तक देखने में आयी है कि पाँचो भक्तियों के सर्वश्रेष्ठ अधिकारीगण भगवान वेदव्यासजी विरचित श्री मद्भागवत महापुराण के ही पात्र हैं। अतः षष्ठ भक्ति का भी इसी में से कोई पात्र होना चाहिये। षष्ठ भक्ति के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी के बारे में चलकर मैं श्री वेदव्यास जी से ही क्यों न पूछ लूँ। उनसे बढ़कर इस विषय में दूसरा कौन जान सकता है ?" इस प्रकार विचार कर श्री नारदजी तत्काल भगवान वेदव्यास के आश्रम की ओर चल पड़े।

अभी कुछ ही दूर वह गये थे कि सामने से त्रिदेव श्री ब्रह्म जी, भगवान विष्णु एवं भगवान शिवजी आते दिखाई पड़े। श्री नारदजी मन ही मन विचार करने लगे—"आखिर मैं जो नहीं चाहता वही हो जाता है। मैं आज इन त्रिदेवों से साक्षात्कार करने को तैयार नहीं हूँ फिर भी ये सामने आ ही गये और वह भी एक साथ। अब मैं क्या करूँ ?" श्री नारदजी अभी ऐसा विचार कर ही रहे थे कि श्री विष्णु भगवान की दृष्टि इन पर पड़ ही गयी। उन्होंने श्री ब्रह्मा जी को संकेत कर दिया। श्री ब्रह्माजी दूर से ही बोले—"वत्स नारद यहाँ आओ। हम त्रिदेव आज तुम्हारे सामने पड़ गये हैं, अतः तुम्हारा कल्याण निश्चित होगा।" श्री नारदजी अन्दर ही अन्दर जल-भुन गये। वे तो इन तीनों से मिलना नहीं चाहते थे। वे सोचने लगे—"इन्हीं तीनों के सामने पाँचों भक्तियों में मेरा अपमान होता आया है अभी तक मेरा कोई कल्याण नहीं हुआ। अब षष्ठ भक्ति में क्या कल्याण करेंगे ?" इस प्रकार विचार करते हुए श्री नारदजी उनसे न मिलने का निश्चय कर मार्ग बदल कर आगे बढ़ गये। त्रिदेवगण मुस्करा कर रह गये। इधर श्री नारद जी जल्दी जल्दी कदम बढ़ाते हुए शीघ्र ही श्री वेदव्यासजी के आश्रम पर पहुँच गये। उन्हें इस बात की आज प्रसन्नता थी कि त्रिदेव एक साथ रहने के कारण मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुँच सकते। श्री वेदव्यास जी की कुटी के बाहर शिष्य लोग जप-तप में लगे थे। कुछ शिष्य आश्रम की सफाई में लगे थे। उनसे श्री नारदजी ने पूछा—"श्री वेदव्यासजी कहाँ हैं?" शिष्यों ने बताया कि गुरुदेव जी कुटी में विद्यमान हैं। श्रीनारदजी सीधे कुटी में प्रवेश कर गये। श्री वेदव्यास जी ने उनका स्वागत करते हुए आसन दिया और आने का कारण पूछा। श्री नारद जी ने कहा—"भगवन् अब तक मैं आप द्वारा रचित नौ भक्तियों में से पाँच भक्ति में असफल हो चुका हूँ। और पाँचों विजेता भक्त आप द्वारा विरचित श्रीमद्भागवत महापुराण के ही पात्र हैं। षष्ठ भक्ति का अधिकारी कौन हो सकता है? इसके बारे म आप से अधिक अच्छा दूसरा कौन बता सकता है? यही पूछने के लिये मैं आप के पास आया हूँ।"

देवर्षि नारद जी के वचन सुनकर श्री वेदव्यास जी हँस पड़े। उन्होंने कहा—"श्री नारदजी भगवान की माया अपार है। फिर भी जब आप मेरे पास आये हैं, तो यथाशक्ति मैं आप की सहायता अवश्य करूँगा। इतना कहकर श्री वेदव्यास जी ने ध्यान लगाया और थोड़ी देर में आँखें खोल बोले "श्री नारदजी, इसके लिए आप को महात्मा बिदुर के पास जाना पड़ेगा।" श्री वेदव्यास जी की वाणी सुनकर श्री नारदजी चौंक पड़े। आश्चय चकित हो उन्होंने कहा—"क्या? महात्मा बिदुर? आपके पुत्र? वह भी दासी के गर्भ से उत्पन्न? कहीं आप अपना पुत्र होने के कारण उनका पक्ष तो नहीं ले रहे हैं? इतने बड़े श्रीमद्भागवत महापुराण में षष्ठ भक्ति का अधिकारी आप को केवल बिदुर ही मिले हैं? मुझे यदि ऐसा मालूम होता, तो मैं आप के पास आता ही नहीं।" श्री नारदजी के तीखे वचनों को सुनकर श्री वेदव्यास जी बोले—"आप भी तो ब्रह्माजी के पुत्र हैं, फिर भी उनसे छिपकर अधिकारी खोजने आये हैं। ऐसा क्यों? रही बात महात्मा बिदुर के दासी पुत्र होने की। तो आप भी तो पूर्वजन्म म दासी पुत्र थे। ब्राह्मणों का संसर्ग होने से आज आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी अपने को भक्त मान रहे हैं। यदि उन ब्राह्मणों का संसर्ग न रहा होता, तो आप भगवान की भक्ति में शून्य ही होते" श्री नारदजी तिलमिलाते हुए बोले—"अरे वेदव्यासजी आप तो मुझसे लड़ने को तैयार हो गये हैं। विदुर जी राजनीति में कुशल हैं। भक्ति तो उनमें अति अल्प है, फिर वह षष्ठ भक्ति के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी कैसे हो सकते हैं? अच्छा एक बात आप बतलाइये, आप ने किसका ध्यान किया था?" श्री वेदव्यास जी ने कहा—"श्री नारद जी श्रीमद्भागवत महापुराण की रचना मैंने भगवान बिष्णु के अवतार श्री वासुदेव की कृपा से ही किया हैं। बिना उनकी कृपा के एक अक्षर की भी रचना मेरे लिये सम्भव नहीं थी।" श्री नारद जी निरुत्तर हो सीधे महात्मा विदुर जी के पास जा पहुँचे। श्री विदुर जी ने उनका स्वागत सत्कार कर स्वयं को धन्य माना।

स्वागत के बाद आसन पर विराजमान होने पर श्री नारद जी से श्री विदुर जी ने पूछा—"भगवन् आप तो भगवान् के २४ अवतारों में साक्षात् तीसरे अवतार हैं। आज आप ने मेरे यहाँ आकर मुझे और मेरे सम्पूर्ण परिवार को सनाथ कर दिया। आप का आगमन किसी विशेष कारण से ही होता है। क्या मुझ जैसे तुच्छ सेवक के लिए कोई आज्ञा हैं?" श्री नारदजी ने कहा—"विदुर जी" षष्ठ भक्ति के अधिकारी के बारे में मैंने आप के पिता श्री वेदव्यास जी से प्रश्न किया था, तो उन्होंने आप का नाम लिया। इसीलिये मैं आप के पास आया हूँ। षष्ठ भक्ति (वन्दन) में आप कैसे श्रेष्ठ हैं?" महात्मा विदुर लज्जित होते हुए संकोच के साथ बोले—'भगवन् "वन्दन" भक्ति में आप की तुलना में मेरा क्या अस्तित्व है? दिन रात वीणा पर तान के साथ आप भगवान की ही तो वन्दना करते रहते हैं। पता नही क्यों भगवान् वेदव्यास ने मेरा नाम ले लिया?" श्रीनारद जी महात्मा विदुर की वाणी में विनम्रता देखकर बहुत सन्तुष्ट हुए और प्रसन्नता के साथ बोले—"विदुर जी आप बड़े ही विनम्र और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धैर्यवान हैं यद्यपि आप की बात सत्य है कि मेरे साथ आप की तुलना सूर्य के आगे दीपक दिखलाने की तरह है, फिर भी मेरे साथ आप को "षष्ठ भक्ति के अधिकारी" की परीक्षा देनी ही पड़ेगी। क्योंकि निर्णय इसी से सम्भव है।" महात्मा विदुर श्री नारदजी की इस दृढ़ता से विवश हो गये।

इसी समय एक विचित्र घटना घट गयी। अतः श्री नारद जी के सामने उपस्थित इस समस्या का समाधान स्वयं निकल आया। एक नवयुवती स्त्री अपने मृतक दो पुत्रों को लेकर महात्मा विदुर के पास आयी। अपने दोनों हाथों से वक्षस्थल को पीटते हुए बेजार रो रही थी वह। रोती हुई कहने लगी—"ये ही दोनों मेरे पुत्र मेरे जीवन के सहारा थे। दोनों को एक सर्प ने काट लिया है। इनकी तत्काल मृत्यु हो गयी। हे महात्मा विदुर जी, आप भगवान के भक्त हैं। मेरे इन पुत्रों को जीवित कर दीजिये। यदि ये जीवित नहीं होंगे, तो मैं भी आप के सामने ही अपना प्राण त्याग दूँगी।" महात्मा विदुर सहसा घबरा गये, किन्तु सद्यः उन्हें एक बात सूझ गई। उन्होंने कहा - "बहन, चिन्ता मत करो। बड़े अच्छे अवसर पर आयी हो। साक्षात भगवान नारद जी यहाँ उपस्थित हैं। यह अभी तुम्हारे दोनों पुत्रों को जीवनदान दे देंगे।" श्री नारद जी ने अच्छा अवसर देखा और कहने लगे—"श्री विदुर जी, इसी घटना से हम लोगों की समस्या का हल निकल आयेगा। हम दोनों मृतक बालकों को लेकर भगवान के मन्दिर में चलें। "वन्दन" भक्ति से एक बालक को आप जीवित करा लीजिये भगवान से। दूसरे को मैं अपनी 'वन्दन" भक्ति से भगवान को प्रसन्न कर जीवित करा दूँगा। हम दोनों में जो भगवान को पहले प्रसन्न कर अपने पक्ष के बालक को जीवित करा लेगा, वही विजयी होगा।" महात्मा विदुर ने कहा—"भगवन् यहाँ तो इन दोनों बालकों को, जीवित करने की बात है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि आप ने भगवान् को प्रसन्न कर एक को जीवित करा लिया और मैं दूसरे को नहीं करा सका, तो भी इस बहन का दुःख दूर नही होगा।" श्री नारदजी ने उत्तर दिया—"इसके लिए आप चिन्ता मत करिये। यदि भगवान मुझसे प्रसन्न होकर मेरे पक्ष के बालक को पहले जीवित कर देंगे तो पुनः उनकी "वन्दना" कर मैं आप के पक्ष वाले दूसरे बालक को भी जीवित करा लूँगा।" श्री नारद जी के विचार को सुनकर महात्मा विदुर बहुत प्रसन्न हुए। अतः वह श्री नारद जी के साथ भगवान की "वन्दन" भक्ति की परीक्षा देने के लिये महर्ष तैयार हो गये और दोनों परीक्षार्थी उन दोनों मृतक बालकों को लेकर भगवान् के मन्दिर में गये।

भगवान् वासुदेव की मुस्कुराती हुई दिव्य मूर्ति के सामने श्रीनारद जी एवं श्री विदुर जी "वन्दना" करने के लिये प्रस्तुत हुए। एक-एक मृतक बालक को अपनी-अपनी ओर कर भगवान के सामने लेटा दिये। दोनों ही भक्त आँखें मूँद कर भगवान् वासुदेव की "वन्दना" करने लगे। "वन्दना" करते हुए अभी कुछ ही समय बीता था कि स्पष्ट आवाज धीरे-धीरे आने लगी। एक व्यक्ति कह रहा था – "श्री उमा पतिजी, देख रहे हैं ? कितना बड़ा सर्प है ? अरे, यह तो श्री नारद जी एवं श्री विदुर जी को एक साथ ही निगल जाना चाहता है। इतना बड़ा एवं भयानक सर्प मैंने आज तक नहीं देखा है।" दूसरे व्यक्ति ने कहा—'हाँ श्री पतिजी, मैंने भी इतना विशालकाय एवं अति भयंकर सर्प अभी तक नहीं देखा है। अब दोनों व्यक्ति एक साथ बोले "आप ही बतलाइये श्री वेदमुख जी. इस महाभयंकर सर्प से इन दोनों भक्तों की कैसे रक्षा हो ? समस्या तो यह है कि ये दोनों भक्त अपनी आँखें बन्द करके भगवान की "वन्दना" कर रहे हैं। अरे, श्री वेदमुख जी. देखिये न, सर्प तो श्री नारद जी को पहले ही निगलने को तैयार है।" तीसरे व्यक्ति श्री वेदमुख जी ने कहा—'आप लोग भी अजीब बातें करते हैं। श्री पतिजी एवं श्री उमापति जी हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीनों पहले अपनी जान बचावें तब इन दोनों भक्तों के बारे में सोच। आप भला तो जग भला। देखिये न यह सर्प अब श्री नारद जी को अपने मुँह में लेने जा रहा है। इन्हें निगल कर फिर श्री विदुर जी का भक्षण करेगा। उनके बाद हम तीनों को। चलिये शीघ्र हम सब यहाँ से भाग चलें।" श्री नारद जी सारी बातें सुन रहे थे। अन्दर ही अन्दर वह भयभीत हो रहे थे। किन्तु इससे पहले प्रथम, द्वितीय एवं अन्य भक्तियों के परीक्षण काल में वह भगवान विष्णु की माया को समझ नहीं पाये थे, जिससे पराजित होना पड़ा था। अतः वह 'वन्दना" करते समय आज संयमित रहने की सोच रहे थे। इसी समय उन तीनों व्यक्तियों के भागने की आहट उनके कान में पड़ी। अब वह बेचैन हो गये। यह सुनकर कि सर्प बहुत बड़ा एवं भयकर हैं और इन दोनों बालकों को डसनेवाला कोई सर्प ही हैं। सायद वही सर्प आ गया हो और दोनों बालकों को जीवित कराने का उद्योग देखकर क्रोधित होकर हम दोनों को निगल जाने को तैयार हो? किन्तु डसने वाला सर्प इतना बड़ा और भयानक यदि है, तो यह इन दोनों बालकों को भी क्यों नहीं निगल लिया? इन्हें डँसा क्यों? हो सकता है कि डँसनेवाले सर्प का यह कोई सम्बन्धी सर्प हो? जो उसकी प्रार्थना पर हमें निगलने आया हो?" इस प्रकार अनेकों प्रकार की आशंकाओं से घिर हुए श्री नारद जी का मन "वन्दना" करने से उचट गया और धीरे-धीरे वह अपनी एक आँख खोलकर उस सर्प को देखने का प्रयास करने लगे और देखते हैं कि वास्तव में एक अत्यन्त विशालकाय भयानक सर्प क्रोध से आँखें लाल किये हुए उन्हीं की ओर झपटने को तैयार हैं। वह बेहद घबरा गये और बड़े जोर से चिल्लाते हुए श्री विदुर जी से बोले —"श्री विदुर जी भागिये, यह भयानक सर्प हम दोनों को निगलने के लिये पूर्ण तैयार है।" इस प्रकार चिल्लाते हुए वह भागने लगे। उस सर्प ने भागते हुए श्री नारद जी का पीछा किया और दो ही कदम पर उनके पैरों को जकड़ लिया। श्री नारद जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवश होकर काँपने लगे। अत्यन्त भयानक सर्प को देखकर उनकी आँखें फटी की फटी रह गयीं। वह भगवान् की "व दना" भूल गये थे। श्री विदुर जी 'वन्दना" में ही लग रहे।

इसी समय एक घटना और घट गयी। काँपते हुए श्री नारद जी सर्प से जकड़े हुए स्वयं को बचाने में निरुपाय सामने देख रहे हैं कि एक दूसरा सर्प उतना ही बडा और डरावना क्रोध से आंखें लाल किये चला आ रहा है। श्री विदुर जी को निगलने आ रहा है। पर यह क्या? यह सर्प भी श्री विदुर जी की ओर न जाकर श्री नारद जी की ओर ही दौड़ा चला आ रहा है। श्री नारद जी तो पहले से ही एक सर्प के द्वारा जकड़े जाने से भागने में असमर्थ थे, फिर अब भागकर वह जायँ, तो कैसे जायँ? आखिर में वह दूसरा सर्प भी सरसराता हुआ आया और इनके ऊपर चढ़कर सिर तक पहुँच गया। उनकी कमर से सिर तक लपेटकर वह उनके मुँह पर फुफकार मारने लगा। श्री नारदजी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि दोनों ही सर्प उन्हीं को क्यों त्रास दे रहे हैं। श्री विदुर जी के पास एक भी नहीं जा रहे हैं। अत्यन्त भयभीत श्री नारदजी की श्वास ऊपर-नीचे हो रही थी। उन्होंने विचार किया कि इन दो भयंकर सर्पों से प्राण बचाना असम्भव है। भय से व्याकुल श्रीनारद जी अपने जीवन की अन्तिम श्वास गिन रहे थे। तब तक एक महान आश्चर्य हो गया। सामने जो दृश्य था, अविश्वसनीय था। श्रीनारद जी को ऐसा लगा, जैसे वह स्वप्न देख रहे हों। किन्तु वह स्वप्न नहीं, अपितु बिल्कुल सत्य था। उन्होंने देखा कि भगवान् वासुदेव की मूर्ति से साक्षात् विष्णु भगवान् प्रकट होकर श्री विदुर जी के दोनों कन्धों को पकड़कर अत्यन्त स्नेह में कह रहे हैं—"भक्त विदुर, तुम्हारी "वन्दना" ने मुझे बुला लिया और मैं आ गया। उन्होंने प्रणाम करते हुए कहा—"मेरे प्रिय आराध्य देव, आप की आज की प्रसन्नता मेरे जीवन की बहुमूल्य निधि है। भगवन्, सर्प से डँसे जाने के कारण मृतक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन दोनों बालकों के ऊपर आप अनुग्रह करें। इन्हें जीवित कर दें। इनकी माता के ये दोनों एक मात्र आश्रय हैं। भगवान श्री विष्णजी मुस्कुराते हुए बोले– "भक्त विदुर तुम तो स्वय यमराज के अवतार हो। शापवश मानव योनि में आना पड़ा है तुम्हें। अतः तुम भूल गये हो कि मेरे भक्तों के पास मृत्यु तभी आती हैं, जब मेरी इच्छा होती है और उसमें मेरे भक्तों का कल्याण निहित रहता है। ये दोनों मृतक बालक कोई और नहीं, अपितु तुम्हारे पिता श्री वेदव्यास जी एवं महात्मा मैत्रेय जी हैं। स्वयं देखो, दोनों मृतक बालक के शरीरों से वे प्रकट हो रहे हैं और इन दोनों की माता और कोई नहीं अपितु साक्षात् लक्ष्मी जी हैं। वह भी तुम्हारे ऊपर प्रसन्न होकर इस परीक्षा में सम्मिलित हुई हैं।" श्री विदुर जी ने देखा कि दोनों बालकों के शरीरों से भगवान् वेदव्यास जीं एवं महात्मा मैत्रेय जी प्रकट हुए हैं। उधर दोनों बालकों की माता के शरीर से लक्ष्मी जी प्रकट हुई हैं। अब वहाँ न तो बालक रह गये और न ही रोती हुई उनकी माता ही थी। श्री लक्ष्मी जी श्री विदुर जी को दर्शन देकर श्री विष्णु भगवान के संकेत से उनके बाम भाग में विराजमान हो गयीं। श्री नारद जी आश्चर्य चकित अपनी फटी दृष्टि से यह सब देखते रहे। उन्होंने यह भी देखा कि दोनों सर्प उनके शरीर को छोड़कर लुप्त हो चुके हैं। दोनों सर्पों से मुक्त होकर देवर्षि नारद जी भगवान श्री विष्णु एवं श्री लक्ष्मी जी की ओर निरीह दृष्टि से देखने लगे।

भगवान विष्णु ने श्री नारदजी से कहा—"श्री नारदजी, अब तो आप को विश्वास हो गया होगा कि 'वन्दन" भक्ति में श्री विदुर जी आप से श्रेष्ठ हैं। मेरी "वन्दन" भक्ति के समय आप दो सर्पों से भयभीत होकर अपनी जान बचाने के लिए "वन्दन" करना ही भूल गये। श्रीं विदुर जी "वन्दन" के समय मेरे रूप, गुण आदि का ध्यान कर स्वयं को भूल गये थे। उस समय इनके ऊपर चाहे कितनी भी बड़ी विपत्ति आ जाती, उसका इन्हें ज्ञान ही नहीं रहता। जो भक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने मन को बाह्य जगत से मोड़ मुझमें लगा देना है, यहाँ तक कि अपने शरीर से भी अनासक्त होकर मेरे गुणों की महिमा का वर्णन करता हुआ मेरा 'वन्दन" करता है, वही मेरी "वन्दन" भक्ति का अधिकारी होता है। श्री विदुर जी अपनी शरीर की सुधि भूलकर मेरा "वन्दन" कर रहे थे, अतः वही 'वन्दन" भक्ति के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी हैं।" श्री नारद जी ने भगवान् विष्णु एवं श्री लक्ष्मीजी को प्रणाम करते हुए स्वीकार कर लिया कि श्री विदुर जी "षष्ठ" भक्ति (वन्दन) के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी हैं। तनिक संकोच एवं प्रसन्नता के साथ श्री नारद जी बोले—"भगवन् श्री वेदव्यास जी से तो मैंने पूछा था, अतः उन्हें मेरे इस प्रयास के बारे में ज्ञात था, किन्तु श्री मैत्रेय जी को नहीं। फिर मृतक बालक के रूप में यह कैसे आ गये ?"

भगवान् विष्णु ने कहा—'हे नारद जी, श्री वेदव्यास जी, श्री मैत्रेय जी को साथ लेकर मेरे पास आये थे। मैंने ही इन्हें मृतक बालकों के रूप में बनाकर श्री लक्ष्मीजी को इनकी माता बनाया। स्वयं श्री वासुदेव की मूर्ति में प्रविष्ट हुआ। श्री नारद जी ने कहा—"सब बात मेरी समझ में आ गयीं भगवन्? किन्तु एक सन्देह मुझे अभी भी है। जब हम आँख मूँदकर आप की वन्दना कर रहे थे, उस समय तीन व्यक्ति आपस में वार्तालाप कर रहे थे। उनकी बात से लग रहा था कि उनके नाम श्रीपति, उमापति एवं वेदमुख थे। वे तीनों कौन थे ? और कहाँ गये ? इसके अतिरिक्त दोनो भयानक सर्प कहाँ गये ?" भगवान् विष्णु ने कहा—'श्री नारदजी, श्रीपति नाम वाला साक्षात् मैं था। उमापति साक्षात् भगवान शिव थे और वेदमुख साक्षात् आप के पिता श्री ब्रह्मा जी थे, सामने देखिये, भगवान शिव और भगवान ब्रह्मा जी आ रहे हैं और दोनों सर्प भगवान शिव के गले के सर्प थे हमारी योजना के अनुसार भगवान शिवजी ने ही उन्हें वैसा करने का आदेश दिया था। देखिये, सामने से वे दोनों भी सरसराते हुए आ रहे हैं।" देवर्षि नारद जी ने देखा—सामने से भग-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वान शिवजी एवं पिता श्री ब्रह्माजी आ रहे हैं। वह उनको प्रणाम करते हुए नतमस्तक खड़े हो गये। भगवान ब्रह्माजी ने कहा— "वत्स नारद, मैं जानता था कि अब की बार तुम हम त्रिदेवों से नहीं मिलोगे और अकेले ही कोई उपाय करोगे। आज तो तुम समझ ही गये होगे कि 'षष्ठ भक्ति (वन्दन) में भी तुमसे बढ़कर श्री विदुर जी हैं।" श्री नारद जी ने सिर झुकाकर स्वीकार कर लिया।

इस प्रकार भगवान ब्रह्माजी, भगवान विष्णु, भगवान शिवजी एवं श्री लक्ष्मी जी का एक साथ दर्शन करते हुए श्री विदुर जी अपने पिता भगवान वेदव्यास जी एव महात्मा मैत्रेय जी का दर्शन कर कृतकृत्य हो गये। उन्होंने सब को साष्टांग प्रणाम किया। महात्मा विदुर ने देवर्षि नारद जी से गद्‌गद् कण्ठ में कहा—"भगवान श्रीनारद जी आप ने मेरे ऊपर अनुग्रह कर अपने साथ-साथ त्रिदेवों सहित श्री लक्ष्मी जी एव मेरे पिता भगवान वेदव्यास के साथ महात्मा मैत्रेय का भी दर्शन करा दिया। आज मैं धन्य हो गया।" ऐसा कहकर महात्मा विदुर देवर्षि नारद जी के चरणों पर गिर पड़े। देवर्षि नारद जी ने श्री विदुर जी को उठाकर गले लगा लिया और बोले— "धन्य हो महात्मा विदुर, तुम ही षष्ठ भक्ति के वास्तविक अधिकारी हो।"

कथा—७—सप्तम भक्ति का अधिकारी

अब तक छः भक्तियों में असफल होने के बाद महर्षि नारद जी आगे की तीन भक्तियों में भी सफलता से निराश थे। किन्तु अब इन तीन भक्तियों में कौन सर्वश्रेष्ठ है? इसकी जानकारी की अभिलाषा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनके मन में थी। वह विचार करने लगे कि- 'सातवीं दास्य भक्ति का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी कौन हो सकता है? इसके बारे में किससे पूछूँ?" श्री नारद जी ऐसा विचार कर ही रहे थे कि उनके पिता श्री ब्रह्माजी आ गये। पहुँचते ही उन्होंने श्री नारद जी से कहा— "वत्स, तुम अवश्य इस चिन्ता में होंगे कि दास्य भक्ति का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी कौन हो सकता है? श्री विष्णु भगवान ने इस समस्या का हल पहले ही कर दिया है। उन्होंने मुझे बुलाकर बताया कि दास्य भक्ति का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी का ज्ञान प्राप्त करने के लिये महाराज ध्रुव के पास चलना होगा।" श्री नारद जी ब्रह्मा जी की इस वाणी को सुनकर चौंक गये। उन्होंने कहा—"पिता जी, यह कैसे हो सकता है? ध्रुव को भगवान विष्णु ने ही छत्तीस हजार वर्ष के अखण्ड राज्य का वरदान दिया है। इतना बड़ा राजा होकर भला ध्रुव दास्य भक्ति कैसे कर सकता है? हाँ, अन्य भक्तियों में सम्भव हो सकता है।" ब्रह्मा जी कुछ बोलते, तब तक भगवान विष्णु स्वयं आ गये और पहुँचते ही उन्होंने श्री नारद जी से कहा—"महर्षि नारद जी, ब्रह्माजी ठीक कह रहे हैं। मैंने ही इनसे ध्रुव के बारे में कहा था। चलिये, हम वहीं चलें।"

श्री नारद जी ने भगवान विष्णु को प्रणाम करते हुए कहा— "भगवन् ध्रुव जिस समय पाँच वर्ष का था, उसी समय तपस्या करने के लिये वन जा रहा था। रास्ते में मुझसे भेंट हो गई थी। मैंने उसे लौटाना चाहा, किन्तु वह दृढ़ था। तब मैंने ही कृपालु होकर उसे आप के द्वादशाक्षर मन्त्र "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" का ज्ञान दिया था। उसीको जप कर उसने अल्प काल में ही (मात्र छः महीने में) आपके दर्शन करने में सफल हो गया। फिर वह दास्य भक्ति में मुझसे कैसे श्रेष्ठ हो सकता है?" श्री विष्णु भगवान ने कहा— "श्री नारद जी, जैसे अभी तक छः भक्ति में हम देखते चले आये हैं, वैसे ही चल कर दास्य भक्ति भी देख लें।" श्री नारद जी ने कहा— "हाँ यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वात ो ठीक ही है। आखिर चलकर देखना तो पड़ेगा ही। किंतु एक बात है कि वहाँ केवल आप और मैं दो ही व्यक्ति चलें। पिता श्री ब्रह्मा जी को वहाँ चलने की क्या आवश्यकता ह ?" श्री विष्णु भगवान ने कहा—"ठीक है. हम दोनों ही चलें।" श्री ब्रह्मा जी ने भगवान विष्णु को प्रणाम किया और चले गये।

श्री नारद जी भगवान विष्णु के साथ चल पड़े। शीघ्र ही वे महाराज ध्रुब के राज्य में पहुँच गये। भगवान विष्णु ने श्री नारद जी स कहा—"हम लोग अपने वास्तविक वेष में चलकर अच्छी तरह स ध्रुव की परीक्षा नहीं ले सकेंगे। अतः हम दोनों ब्राह्मण वेष में वहाँ चलें।" श्री नारद जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और भगवान् विष्णु ने अपना और श्री नारद जी का वेष ब्राह्मण के रूप में परिवर्तित कर लिया। दोनों ब्राह्मण महाराज ध्रुव के दरवार के द्वार पर जा प॰ुचे और द्वारपाल से वोले "हम दोनों महाराज ध्रुव से मिलना चाहते हैं। शीघ्र उनसे अनुमति लेकर आओ।" द्वारपाल ने कहा—ब्राह्मण देवताओं, आप लोग विना अनुमति के ही महाराज क पास जा सकते हैं। महाराज ध्रुव ब्राह्मणों के परम भक्त हैं और उन्होंने हम द्वारपालों की नियुक्ति के समय ही कह दिया था कि यदि कोई ब्राह्मण मुझसे मिलने आवें. तो उन्हें बिना मेरी अनुमति के ही मेरे पास लाना। अतः आप लोग चलें।" हम आपको महाराज ध्रुव के पास पहुँचा देते हैं। ऐसा कहकर एक द्वारपाल ने दोनों ब्राह्मणों को साथ लेकर महाराज ध्रुव के पास पहुँचा दिया। महाराज ध्रुव ने जब देखा कि दो ब्राह्मण आये हैं, तो वह अपने आसन से उठकर दौड़े और उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। आसन पर बैठाकर विधिवत स्वागत-सत्कार किया। पश्चात् बोले—"हे ब्राह्मण देवताओं, आप लोगों ने आज मेरे यहाँ आकर मुझे सनाथ कर दिया। ब्राह्मण तो पृथ्वी के साक्षात् देवता हैं, विष्णु स्वरूप हैं। कृपा करके आप लोग मुझे आज्ञा दें कि मैं आप लोगों की क्या सेवा करूँ।" ब्राह्मण वेषधारी भगवान्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णु बोले- 'हे राजन्, हम दोनों ब्राह्मण भगवान् विष्णु के दास हैं। भगवान् विष्णु की नौ भक्तियों में दास्य भक्ति सातवीं भक्ति है। हमने सुना है कि आप राजा होकर भी भगवान् की दास्य भक्ति में बहुत आगे हैं। अतः हम दोनों आप के साथ दास्य भक्ति की परीक्षा देने आये हैं।" महाराज ध्रुव ने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा 'हे ब्राह्मण देवताओं मैं भगवान् विष्णु का भक्त अवश्य हूँ किन्तु ब्राह्मण की तुलना में मुझ क्षत्रिय की भक्ति भला कैसे बढ़कर होगी? ब्राह्मण आदिकाल से भगवान् विष्णु के अत्यन्त प्रिय भक्त होते आये हैं। मैं आप लोगों के सामने किसी प्रकार से भी किसी भी भक्ति में बराबरी नहीं कर सकता। फिर बढ़ने का तो प्रश्न ही नहीं उठता" ब्राह्मण वेषधारी श्री नारदजी ने कहा—"जो कुछ भी हो हम आपकी दास्य भक्ति का अपने साथ परीक्षण अवश्य करेंगे जिससे हमारी समस्या का समाधान हो सके।" महाराज ध्रुव ने श्री नारद जी का स्मरण किया और कहने लगे- हे ब्राह्मणों, मुझे जो कुछ भी भक्ति प्राप्त हुई है, उसके मूल में महर्षि श्री नारद जी की महान् कृपा है। जब मैं मात्र पाँच वर्ष का था. तो अपनी सौतेली माता सुरुचि के वाग्बाणों से विद्ध होकर और अपनी माता—सुनीति की आज्ञा प्राप्त कर भगवान् विष्णु की आराधना करने चल पड़ा था। मेरे मन में उस समय भगवान् विष्णु के प्रति भक्ति नहीं थी। मैं तो अखण्ड राज्य की कामना से तप करके भगवान् विष्णु को प्रसन्न करने जा रहा था। रास्ते में भगवान् श्री नारद जी मिल गये। मेरे ऊपर उनकी बड़ी कृपा हुई। उन्होंने ही मुझे द्वादशाक्षर मन्त्र का उपदेश दिया और भगवान् को प्रसन्न करने का आशीर्वाद दिया। मैंने उसी मन्त्र को जपकर केवल छः मास में ही भगवान् विष्णु को प्रसन्न कर लिया था। जिस समय भगवान् विष्णु ने मुझे दर्शन दिया, उस समय मैं कृतार्थ हो गया था और महर्षि श्री नारद जी की कृपा याद करके उनके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करने में असमर्थ हो गया। अतः हे भगवान् श्री नारद जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की वह महती कृपा ने मुझे भगवान विष्णु का सान्निध्य प्राप्त कराया। हे ब्राह्मणों, भगवान से उस समय मैंने उनको भक्ति नहीं माँगी। भगवान जनार्दन मेरे भाव को जानते थे कि ध्रुव अखण्ड राज्य की कामना से ही मेरी तपस्या की है। अतः उन्होंने भगवान विष्णु ने मुझे छत्तीस हजार वर्ष तक का अखण्ड राज्य का वरदान दे दिया। यह तो उनकी परम कृपा थी कि राज्य के साथ उन्होंने यह भी वरदान दे दिया कि--"ध्रुव तुम चक्रवर्ती राजा होकर भी अन्त समय तक मुझे बिस्मृत नहीं करोगे। मेरा स्मरण करके अत्यन्त उच्च लोक को प्राप्त करोगे, जो कि देवताओं को भी दुर्लभ है।" बस. इतनी भगवान् की कृपा मेरे लिये पर्याप्त हो गयी। वरदान देकर भगवान् अन्तर्धान हो गये। मैं वहाँ से चल पड़ा। रास्ते में मुझे इस बात का स्मरण हुआ कि प्रभु का दर्शन मुझे प्राप्त हुआ और मैं इतना बड़ा अभागा था कि वरदान के रूप में भगवान् की भक्ति को नहीं माँग सका। मद पैदा करनेवाले राज्य का वरदान भला मेरा क्या कल्याण करेगा?" इस प्रकार अपनी मन्द भाग्यता को कोसता हुआ मुझे आभास हुआ कि—"अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।" हे ब्राह्मणों यही मेरी भक्ति का सार तत्त्व है। भला मुझ ऐसा अधम व्यक्ति आप दोनों ब्राह्मण देवताओं की भक्ति कीं तुलना में कहाँ तक टिकेगा?" इतना कहकर महाराज ध्रुव चुप हो गये।

इधर महर्षी श्री नारदा जी ध्रुव से अपनी प्रशंसा सुनकर मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रहे थे और कनखियों से ब्राह्मण वेषधारी भगवान् विष्णु की ओर ताकने लगे मौका निकाल कर धीरे से बोले—"देख लिया न भगवान् विष्णु जी, मैं तो आप से पहले ही कह रहा था कि ध्रुव की भक्ति का कारण मैं ही हूँ। वह मुझे किसी भक्ति में नहीं पा सकता फिर दास्य भक्ति में क्या पायेगा?" ब्राह्मण वेषधारी भगवान् विष्णु ने ब्राह्मण वेषधारी श्री नारद जी के हाथ को अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाथ की उँगलियों से दबाते हुए मौन रहने के लिये संकेत किया। और महाराज ध्रुव से बोले– हमारा विचार है कि आप के साथ दास्य भक्ति की परीक्षा अवश्य होनी चाहिये। अतः कृपा करके आप हमारे साथ दास्य भक्ति की परीक्षा दें।" महाराज ध्रुव ने कहा - 'मैंने तो पहले ही बता दिया कि मेरी क्षमता आप लोगों की तुलना में कुछ भी नहीं है। फिर भी आप लोग ब्राह्मण देवता है। मैं आप लोगों की आज्ञा का उलंघन कैसे कर सकता हूँ। चलिये भगवान् विष्णु के मन्दिर में चलते हैं। वहीं पर हम तीनों दास्य भक्ति की परीक्षा दें।" ब्राह्मण वेषधारी भगवान् विष्णु एव श्री नारद जी महाराज ध्रुव के साथ भगवान विष्णु के मन्दिर में गये और परीक्षण की तैयारी करने लगे।

इसी समय एक द्वारपाल ने आकर महाराज ध्रुव से निवेदन किया —"महाराज द्वार पर दो कुष्ठ रोगी ब्राह्मण आये हैं, और वे भी आप से मिलना चाहते हैं। कुष्ठ रोग होने के कारण उन्हें अन्दर लाने के लिये मैं आप से अनुमति लेने आया हूँ।" महाराज ध्रुव ने कहा— "शीघ्र उन्हें अन्दर ले आओ। ब्राह्मण कैसा भी हो, उसे मेरी अनुमति के बिना ही अन्दर लाया करो।" आज्ञा पाकर द्वारपाल जाकर उन कुष्ठ रोगी ब्राह्मण को अन्दर लाया। इधर ब्राह्मण वेषधारी श्री नारद जी बोले—"महाराज ध्रुव, पहले दास्य भक्ति की परीक्षा हम सब दे दें, फिर आप इन कुष्ठ रोगियों की समस्या का समाधान करें।" उन कुष्ठ रोगियों के अंग से पीप एवं मवाद बह रहा था। वे दोनों अत्यन्त वृद्ध थे। उनके ऐसे भयानक रोग देखकर घृणा लग रही थी। महाराज ध्रुव ने उन दोनों को दण्डवत प्रणाम किया और सादर बैठाते हुए बोले –"हे ब्राह्मण देवताओं, ये दो ब्राह्मण मेरे पास पहले से ही आ चुके हैं। इनका कार्य करके मैं आप लोगों की सेवा में तुरन्त उपस्थित होऊँगा। तब तक आप लोग यहीं विश्राम करें।" इतना सुनकर उन कुष्ठ रोगियों में से एक ने कहा –"महाराज हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों ही भगवान् विष्णु के भक्त हैं। इस समय शरीर से विकृत एवं असमर्थ हो गये है। हमारे शरीर में बड़ी पीड़ा हो रही है। लोग हमसे घृणा करते हैं। कोई भी पास बैठने नहीं देता है। हमने अनेकों वैद्यों से इसका इलाज कराया, किन्तु सब व्यर्थ गया। अन्त मे निराश होकर हम दोनों भगवान् विष्णु के मन्दिर में अनशन कर बैठ गये। भगवान् के सामने हमने निवेदन किया—"हे भगवान् हमारे रोग को दूर करें, अन्यथा हम यहीं पर बिना अन्न जल ग्रहण किये अपना प्राण दे देंगे। तीन दिन बीतने पर भगवान विष्णु प्रकट होकर हमारी तरफ देखे और बोले–"हे मेरे भक्त ब्राह्मणों, मैं आप लोगों को इस रोग के निवारण का एक ऐसा उपाय बताता हूँ जो अकाट्य है। आप दोनों इस समय महाराज ध्रुव के पास जाइये। वहाँ पर श्री नारदजी एक कार्य से आनेवाले हैं। वह अपने हाथ से आप दोनों मे से एक के शरीर की पीप एवं मवाद साफ कर देंगे। और महाराज ध्रुव दूसरे के शरीर को साफ कर देंगे, तो आप दोनों तत्काल स्वस्थ हो जायेंगे। किन्तु एक विकट बात होगी, आप लोगों का रोग ज्यों ही छूटेगा, वह जाकर श्री नारद जी एवं महाराज ध्रुव के शरीर में प्रवेश कर जायेगा और वे दोनों कुष्ठ रोगी हो जायेंगे। आप लोगों की ही तरह उनके अंगों से पीप व मवाद बहने लगेगी।"

उन्हीं भगवान् बिष्णु की आज्ञा से हम दोनों आप के पास आये हैं। श्री नारद जी आप के यहाँ आये है कि नहीं ? यदि आये है, तो उन्हे यहाँ बुलाने की कृपा कीजिये। यदि अभी नहीं आय हैं तो हम दोनों उनका इन्तजार करेंगे।" कुष्ठ रोगीं ब्राह्मणो की बातें सुनकर श्री नारद जी ब्याकुल हो गये। उन कुष्ठ रोगियों को देखकर ही उन्हें घृणा हो रही थी और उन्हें स्पर्श कर बह अपने ऊपर उस रोग को भला क्यों लेना चाहेंगे ? धीरे से वह ब्राह्मण वेषधारी भगवान् विष्णु से बोले—"हे भगवान् विष्णु आपने यह क्या किया ? आपने मुझे बहुत बड़ा धोखा दिया। पहले इन दोनों से मेरे यहाँ आने की बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बताकर तब आप मुझे यहाँ ले आये हैं । ये दोनों महा रोगी तो मुझे ही खोजते यहाँ आये हैं । अभी जब मेरा भेद खुल जायेगा, तो महाराज ध्रुव मुझसे यही कहेंगे कि इन दोनों में से किसी एक की सेवा आप करिये। उस समय मैं धर्म सङ्कट में पड़ जाऊँगा। इससे तो भला यही है कि इस समय मैं झटपट यहाँ से भाग जाऊँ। दो-चार दिन बाद फिर आकर महाराज ध्रुव के साथ दास्य भक्ति का परीक्षण कर लेंगे।" ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु ने धीरे से श्री नारद जी से कहा "आप चिन्ता मत करिये। महाराज ध्रुव को हम लोगों के बारे में कुछ पता ही नहीं चलेगा। हम लोग परीक्षण कर ऐसे ही वापस चले-चलेंगे।" ब्राह्मण वेशधारी श्री नारद जी ने कहा—"हे प्रभो, आप के ऊपर मैं भरोसा कर ही नहीं सकता। अतः यदि आप नहीं भी चलेंगे तो मैं अकेला ही चला जाऊँगा। किन्तु यहाँ एक क्षण भी नहीं रहूँगा कहीं आपने अपने भक्त का कार्य बनाने के लिये मेरा भेद खोल दिया तो मैं कहीं का नहीं रह जाऊँगा।" श्री नारद जी ने जाने का मन बना लिया।

इधर महाराज ध्रुव कुष्ठ रोगी ब्राह्मणों की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए कि आज महर्षि श्री नारद जी मेरे यहाँ पधारेंगे। मैं आज उनके चरणों का दर्शन करूँगा। ऐसी प्रसन्नता के साथ उन ब्राह्मणों से महाराज ध्रुव ने कहा –"हे ब्राह्मणों मेरे लिये आप लोग भगवान बन कर आये हैं। आप लोगो से भगवान श्री नारद जी के आगमन की बात सुनकर मैं इतना प्रसन्न हूँ कि उसका वर्णन नहीं कर सकता। श्री नारद जी अभी तो आये नहीं हैं। यदि मेरी सेवा से आप दोनों का कुष्ठ रोग दूर हो जाय, तो मैं ही आप लोगों की सेवा कर दूँ। भगवान श्री नारद जी को कष्ट न उठाना पड़े। वह तो मेरे भगवान हैं। मैं जो कुछ आज हूँ, उन्हीं की कृपा से हूँ।" दोनों कुष्ठ रोगी ब्राह्मण एक साथ बोल पड़े—"ऐसा नहीं हो सकता। भगवान विष्णु ने कहा था कि एक का रोग श्री नारद जी एवं दूसरे का श्री ध्रुव जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने हाथ से सेवा करके ही दूर कर सकेंगे और वह भी दोनों व्यक्ति एक साथ ही। आगे पीछे कदापि नहीं। अतः श्री नारद जी के आने पर ही उनके साथ आप भी हम दोनों में से किसी एक के अंग की सफाई करके कुष्ठ दूर कर सकेंगे।" महाराज ध्रुव ने कहा —'जैसी आप लोगों की आज्ञा। तो फिर बैठिये। हम सभी भगवान श्रीनारद जी के आगमन की प्रतीक्षा करें।"

यह सुनकर ब्राह्मण वेषधारी महर्षि श्री नारद जी और अधिक व्याकुल हो गये। उन्होंने ब्राह्मण वेषधारी भगवान विष्णु से कहा — "आप का क्या भरोसा? अभी आप मुझे वास्तविक भेष में ला देंगे, तो मुझे मजबूर होकर इन कुष्ठ रोगियों में से किसी एक की सेवा करनी होगी और मैं कुष्ठ रोगी हो जाऊँगा। अतः अब मैं जाता हूँ।" ऐसा कह कर ब्राह्मण वेषधारी श्री नारद जी उठने लगे। तब तक एक महान् आश्चर्य हुआ। महर्षि श्री नारद जी ने देखा कि वह अपने वास्तविक रूप में आ गये हैं। महाराज ध्रुव ने देखा, भगवान् नारद जी उनके सामने खड़े हैं। गद्‌गद् होकर उन्होंने भगवान् नारद जी को साष्टांग प्रणाम किया और उनसे प्रार्थना करने लगे —'हे प्रभु आपने दर्शन देकर मुझे कृतार्थ कर दिया। आप कितने दयालु हैं। इस कुष्ठ रोगी का कुष्ठ दूर करने के लिये आप तत्काल प्रगट हो गये। कृपा करके अब इनमें से एक कुष्ठ रोगी विष्णु भक्त ब्राह्मण के शरीर के पीप एवं मवाद की अपने हाथ से सफाई कर इनका कल्याण करिये और दूसरे विष्णु भक्त ब्राह्मण के कुष्ठ की अपने हाथों से मैं सफाई कर देता हूँ।" इतना कहकर महाराज ध्रुव एक कुष्ठ रोगी ब्राह्मण के शरीर की पीप व मवाद साफ करने लगे। उधर श्री नारद जी ब्राह्मण वेषधारी श्री विष्णु भगवान् के ऊपर अत्यन्त क्रोधित होकर बोले— 'आप मेरे साथ सदैव कपट करते आये हैं। आज भी आपने मुझे यहाँ लाकर फँसा दिया। भला इस महारोगी के रोग की सफाई कर इसके इस भयंकर रोग को मैं क्यों धारण करूँ? मैं जाता हूँ।" ऐसा कहकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह जाने को तैयार हुए। दूसरा कुष्ठ रोगी ब्राह्मण श्री नारद जी के पैर को पकड़कर प्रार्थना करने लगा—"हे महर्षि आप तो दया के सागर हैं। मेरे ऊपर दया करें। मेरे साथी का कुष्ठ रोग तो महाराज ध्रव अभी दूर कर देते हैं। देखिये, वह किस प्रकार से पीप और मवाद की सफाई कर रहे हैं। उसी प्रकार आप मेरी पीप-मवाद की सफाई कर दें। आप ने यदि कृपा नहीं की, तो में ऐसे ही रह जाऊंगा। मेरा सारा जीवन व्यर्थ हो जायेगा।" महर्षि श्री नारद जी ने देखा कि उस कुष्ठ रोगी ब्राह्मण ने उनके पैर को जकड़ रखा है, जिससे उसके शरीर का पीप और मवाद उनके पैरों में लग रहा है। वह घृणा सें भर उठे। जोर से चिल्लाकर बोले—"अरे पापी ब्राह्मण तुम अपने पापों की सजा भोग रहे हो, तो मैं तुम्हारे पाप का भागी क्यों बनूँ ? छोड़ों मेरा पैर, देखो तुम्हारे हाथ का पीप-मवाद मेरे पैरों में लग रहा है।" ऐसा कहकर अपना पैर खींचने लगे। किन्तु उस ब्राह्मण ने उनके पैरों को इस प्रकार जकड़ रखा था, कि उन्होंने अपनी सारी शक्ति लगाकर भी पैर मुक्त कराने में सफलता प्राप्त नहीं किया। अब श्री नारद जी घृणा से भरकर बार-बार उस ब्राह्मण से पैर छोड़ने के लिये कहने लगे। ब्राह्मण वेषधारी भगवान् विष्णु ने श्री नारद जी से कहा—"अरे महर्षि जीं, कृपा करके इस ब्राह्मण का उद्धार कीजिये।" महर्षि नारद जी भगवान विष्णु पर पहले से ही बहुत नाराज थे, अब तो उनकी वाणी ने इनके क्रोध को और भड़का दिया। क्रोध में तड़पते हुए बोले—'महाराज ध्रव जी, ब्राह्मण वेष में यह और कोई दूसरा नहीं अपितु भगवान् विष्णु हैं। इन्होंने ही मुझ एवं स्वय को ब्राह्मण वेष में आने के लिये कहा था और हम दोनों का ब्राह्मण रूप होना इन्हीं की देन है। अब देखिये, मुझे तो वास्तविक रूप में करके स्वय छिपे बैठे हैं।"

महाराज ध्रुव ने अब तक एक कुष्ठ रोगी ब्राह्मण का सारा अंग साफ कर दिया था और वह बिल्कुल ठीक हो गया था। किन्तु एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत बडा आश्चर्य यह था कि महाराज ध्रुव के अंग में कुष्ठ रोग कहीं भी नहीं हुआ। अपितु उनका सारा अंग अत्यन्त तेजस्वी हो गया। इधर श्री नारद जीं के सारे अंग में कुष्ठ हो गया और जिस ब्राह्मण ने उनके पैर को पकड़ रखा था, उसका सारा कुष्ठ रोग बिल्कुल ठीक हो गया। इधर भगवान् विष्णु ब्राह्मण वेष त्यागकर अपने स्वरूप में प्रगट हो गये। महाराज ध्रुव अपने आराध्य देव का दर्शन कर गद्गद् हो गये और दौड़कर उनके चरणों पर लेट गये। महर्षि श्री नारद जी को महान् आश्चर्य था कि महाराज ध्रुव के द्वारा पीप-मवाद साफ कर देने से उस ब्राह्मण का कुष्ठ रोग तो ठीक हो गया, किन्तु महाराज ध्रुव को वह रोग बिल्कुल नहीं हुआ और इधर दूसरे ब्राह्मण के किसी भी अंग में रोग नहीं रह गया। जबकि श्री नारद जी ने उसके एक अंग का भी स्पर्श नहीं किया। केवल बलात् उसके द्वारा इनके पैर पकड़ लेने मात्र से वह ठीक हो गया। श्री नारद जी अपने सभी अंगों में कुष्ठ रोग देखकर अत्यन्त भयभीत हो गये और भगवान् विष्णु की ओर निरीह आँखों से ताकने लगे। भगवान विष्णु ने महाराज ध्रुव को अपने दोनों हाथों से उठाया और बोले "देखिये श्री नारदजी मेरे भक्त दोनों कुष्ठ रोगी ब्राह्मणों में से एक की पीप-मवाद साफ कर महाराज ध्रुव ने मेरे प्रति दास्य भक्ति प्रदर्शित कर दिया। मैंने सभी पुराणों एवं शास्त्रों में एक ही बात सिद्ध किया है कि मेरे भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय हैं। मेरी सेवा करनेवाला मेरा भक्त मुझे जितना प्रिय है, उससे भी अधिक प्रिय मेरे भक्त की सेवा करनेवाला होता हैं। महाराज ध्रुव ने अपने ऊपर कुष्ठ रोग का भय न मानकर मेरे भक्त की सेवाकर श्रेष्ठ दास्य भक्ति को प्रदर्शित किया है और आप मेरे भक्त के प्रति कृपा करना, तो दूर उससे घृणा कर रहे हैं। एक क्षण के लिये भीं कुष्ठ रोग आप को सह्य नहीं है। महाराज ध्रुव ने मेरे भक्त ब्राह्मण की सेवा कर उसके कुष्ठ रोग को स्वीकार कर लिया है, फिर भी उन्हें कुष्ठ रोग नहीं हुआ। जबकि आप मेरे भक्त ब्राह्मण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को स्पर्श भी नहीं करना चाहा और कुष्ठ रोग के भय से भागने को तैयार हो गये। मेरे भक्त ब्राह्मण ने आपका पैर बलात् पकड़ लिया। आप ने उससे छूटने का भरपूर प्रयास किया। छुड़ाकर भाग तो नहीं सके, अपितु आपका सारा शरीर कुष्ठ रोग से पूर्ण हो गया। अब आप ही निर्णय कीजिये कि दास्य भक्ति आप में अधिक है कि महाराज ध्रुव में ?" महर्षि नारद जी भगवान विष्णु की बात सुनकर रोने लगे और रोते हुए प्रार्थना करनें लगे– हे प्रभु आप की लीला अपार हैं। आप के भक्त के अतिरिक्त भला आप को कौन जान सकता है ? मैंने आज यह देख लिया कि महाराज ध्रुव दास्य भक्ति के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी हैं। अब मैं प्रसन्नतापूर्वक जीवनपर्यन्त इस कुष्ठ रोग का वहन करूँगा। ऐसा कहकर वह महाराज ध्रुव के चरणों पर गिरने चले। किन्तु महाराज ध्रुव महर्षि नारद जी के चरणों पर लोटते हुए गद्गद् कण्ठ से कहने लगे—"हे प्रभु बचपन में आपकी ही कृपा से मुझे भगवान् विष्णु का दर्शन हुआ था और आज भी आप ही की कृपा से मेरे आराध्य देव भगवान विष्णु का दर्शन हुआ है। भला मैं आपके चरणों की धूल के बराबर भी क्या हो सकता हूँ ? आप तो मेरे आराध्य देव भगवान विष्णु के बराबर ही मेरे लिए पूज्य है। मैं आप से आज सनाथ हो गया।" भगवान् नारद जी महाराज ध्रुव की ऐसी विनम्रता देख हर्ष से विभोर हो गये और कहनें लगे –"धन्य हो महाराज ध्रुव, वास्तव में आप ही दास्य भक्ति के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी हैं।" ऐसा कहते हुए उन्होंने अपने अंगों को देखा, तो महान् आश्चर्य में पड़ गये। देखते हैं कि उनके शरीर में व्याप्त सारा कुष्ठ रोग साफ हो गया है और उनका शरीर तेज से चमकने लगा है। "महर्षि नारद जी ने ज्योंही दोनों कुष्ठ व्यक्तियों की ओर देखा, आश्चर्यचकित हो गये। देखते हैं कि उन दोनों कुष्ठ रोगी ब्राह्मण के स्थान पर भगवान् ब्रह्मा जी एवं भगवान् शिव विद्यमान हैं। दौड़कर उन्होंने उन्हें प्रणाम किया महाराज ध्रुव ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथा-८--अष्टम भक्ति का अधिकारी

सातों भक्तियों में लगातार असफल होने से श्री नारद जी आठवीं भक्ति के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी की चिंता में डूबे रहने लगे। सोते-जागते उठते-बैठते उन्हें यही चिन्ता लगी रहती कि आखिर आठवीं भक्ति का कौन अधिकारी है? अब सातों भक्तियों में लगातार असफल होने के कारण शेष दो भक्तियों में भी मेरी गणना संशयात्मक है। फिर भी इन दोनों भक्तियों के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी की जानकारी रखना आवश्यक है। अन्यथा मेरे मन में उद्वेग बना ही रहेगा।" ऐसा विचार करते हुए श्री नारद जी ने अपनी बुद्धि पर बल दिया और एक निष्कर्ष निकाल लिया। हर्ष से उछल पड़े और तत्काल अपने पिता श्री ब्रह्मा जी के पास जा पहुँचे। पहुँचते ही उन्होंने पिता जी को प्रणाम किया। श्री ब्रह्मा जी आश्चर्य चकित थे कि -- 'श्री नारद जी अब तक तो मुझसे कतराते आ रहे थे किन्तु आज तो यह स्वयं आ गये हैं निश्चय ही भगवान विष्णु की प्रेरणा है अन्यथा इनका मेरे पास आना आकाश पुष्पवत हैं।" आशीर्वाद देते हुए श्री ब्रह्मा जी ने कहा --"वत्स, नारद क्या बात है? आज मैं यह क्या आश्चर्य देख रहा हूँ? अब तक तो तुम मेरे पास आने के विषय में उदासीन थे। आज क्या बात आ पड़ी जो प्रातः काल ही मेरे पास तुम्हें आना पड़ा। श्री ब्रह्मा जी की बात श्री नारद जी को व्यंग्य सा प्रतीत हुई। उन्होंने कहा—"पिता जी आज फिर मेरे ऊपर आप हँस लीजिये। मेरा भाग्य ही ऐसा है। मैं आप के पास एक कार्य से आया हूँ।" श्री ब्रह्मा जी ने कहा— 'क्या बात है वत्स नारद?" श्री नारद जी ने कहा— "पिता जी, अब की बार आठवीं 'सख्य" भक्ति के परीक्षण की बारी है। अब तक मैं श्री विष्णु भगवान पर विश्वास करता आया और उनके साथ प्रायः परीक्षण में जाता रहा। मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि भगवान विष्णु के साथ जा जाकर मैं कहीं भूल तो नहीं कर रहा हूँ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतः अब की बारी मैं आप एवं भगवान शिव के साथ "सख्य" भक्ति के परीक्षण में सम्मिलित होना चाहता हूँ। रही बात यह जानने की कि 'सख्य" भक्ति का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी का परीक्षण किसके साथ किया जाय ? यदि आप जानते हों तो मुझे बतला दें। यदि न जानते हों तो अब की बारी आप ही श्री विष्णु भगवान से पता पूछ लें। मैं भगवान विष्णु के पास तब तक नहीं जाना चाहता जब तक कि— आठवीं भक्ति का परीक्षण न हो जाय। आप पता लगाकर शीघ्र आइये -तब तक मैं भगवान शिव के पास जाकर उनसे इस परीक्षण में अपने साथ चलने के लिये आग्रह करता हूँ।" ब्रह्माजी ने कहा — "वत्स-नारद, तुम व्यर्थ में इतना परेशान हो, भगवान विष्णु ने मुझे "सख्य" भक्ति के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी के लिये सुदामा ब्राह्मण को बताया है। चलो, मैं इसी समय तुम्हारे साथ भगवान शिव के पास चलता हूँ और उन्हें साथ लेकर हम तीनों सुदामा ब्राह्मण के पास चलेंगे।"

श्री नारद जी बहुत प्रसन्न हुए। श्री ब्रह्मा जी के साथ वह तत्काल चल पड़े। और शीघ्र ही भगवान शिव के पास पहुँच गये। भगवान शिव जी उस समय कैलास के शिखर पर विराजमान थे। माता पार्वती उनकी सेवा में तत्पर थीं। श्री ब्रह्मा जी एवं श्री नारद जी ने उन्हें प्रणाम किया। भगवान शिव ने उन्हें बैठने का आदेश दिया। एवं उनके आने का कारण पूछा। श्री नारद जी ने तत्काल उत्तर दिया -- "भगवन्, आप तो सब कुछ जानते हैं। मेरे पिता जी आठवीं भक्ति "सख्य" का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी सुदामा ब्राह्मण को बता रहे हैं। और इनका यह भी कहना है कि इन्हें भगवान विष्णु ने ही बताया है। क्या आप की भी इसमें सहमति हैं ?" भगवान शिव जी ने तत्काल कहा— "श्री नारद जी, आप के पिता जी क्या ऐसी बात भी कह-सकते हैं, जो न हो ? इस समय पृथ्वी पर निवास करनेवाला सुदामा-ब्राह्मण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्विवाद रूप से "सख्य" भक्ति का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी है। यदि आप

को विश्वास न हो तो पार्वतीजी से पूछ लीजिये।" श्री नारद जी ने कहा—"प्रभु महेश्वर जीं. मैं इतना अबोध नहीं हूँ कि आप की बात समझ न सकूँ? भला जिस बात को आप कहेंगे. उसे क्या पार्वती जी मिथ्या सिद्ध करेंगी? अरे, वह तो आप की एक-एक छोटी से छोटी आज्ञा का पालन करने में ही अपना गौरव मानती हैं। फिर वह—आपके विपरीत क्या एक भी शब्द बोल सकेंगी?" श्री नारद जी की बात सुनकर माता पार्वती ने कहा—"श्री नारद जी, आप अब तक सातों भक्तियों में असफल हो चुके हैं फिर भी आप की बुद्धि सही रास्ते पर नहीं आयी। मैं महेश्वर की बात का समर्थन न करके क्या आप की बातों का समर्थन करूँ? सुदामा के समान इस समय तीनों लोकों में "सख्य" भक्ति में और कौन हो सकता है? भगवान विष्णु के अवतार भगवान श्रीकृष्ण सुदामा के साथ संदीपनी गुरु के पास अध्ययन करते थे। उस समय उन दोनों म बड़ी मित्रता थी। सुदामा ब्राह्मण ने जब जान लिया कि मेरे सखा श्री कृष्ण साक्षात् भगवान विष्णु हैं तो उनकी "सख्य" भक्ति अति सुदृढ़ हो गई। जो आज तक अनवरत स्थिर है। क्या आप ने भीं कभी भगवान से मित्रता की है? मित्रता तो मैंने आप की सुनी नहीं, हाँ भगवान को आपने शाप दिया था, उसे मैं अवश्य सुनी हूँ। पार्वती जी और कुछ कहतीं, इससे पहले भगवान शिवजी न उन्हें संकेत से रोक दिया।

श्री नारद जी अब तक पार्वती जी की इतनी बात सुनकर पर्याप्त क्षुब्ध हो चुके थे। उनसे रहा नहीं गया। और वह बोल पड़े—"माता जी, मैं आपकी प्रतिष्ठा करता हूँ, अन्यथा आप की एक-एक बात का उत्तर देता। आप की तरह मुझे एक ही स्थान पर बैठे नहीं रहना है। अभी सुदामा ब्राह्मण की "सख्य" भक्ति का मुझे परीक्षण करने जाना है। आप से उलझने में मेरा समय नष्ट होगा।" माता पार्वती ने कहा—"जाइये, आप को कौन रोक रहा है। अब तक की सात भक्तियों में बड़ा तीर आपने मारा है, अभी "सख्य" भक्ति शेष है उसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection, Digitized by eGangotri

भी जाकर देख लीजिये।" श्री नारद जी ने भगवान शिव जी से कहा–भगवन् आप शीघ्रातिशीघ्र चलने को तैयार हो जाइये। मैं अब यहाँ एक क्षण भी रुकना नहीं चाहता।" भगवान् शिवजी तत्काल श्री ब्रह्मा जी एवं श्री नारद जी के साथ चल पड़े और शीघ्र ही सुदामा जी के घर जा पहुँचे। श्री नारद जी ने देखा कि सुदामा ब्राह्मण का घर राजमहल से भी बढ़कर देदीप्यमान है। रत्न जटित सोने-चाँदी के वहाँ अनेकों भव्य भवन सुशोभित हो रहे थे। एक ब्राह्मण के द्वार पर हाथी-घोड़ा, दास-दासी युक्त इतना वैभव देखकर श्री नारद जी आश्चर्य चकित हो गये। उनको यह पता नहीं था कि भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से सुदामा ब्राह्मण की झोपड़ी राजमहल से भी बढ़कर वैभवशाली बन चुकी है। उन्होंने भगवान शिव एव श्री ब्रह्मा जी की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। मानों वह पूछ रहे हों कि आखिर यह सब क्या हो गया है? उनके इस भाव को जानकर भगवान शिव ने कहा –"श्री नारद जी, भगवान श्रीकृष्ण के प्रति सुदामा की "सख्य" भक्ति का यह प्रमाण है।" श्री ब्रह्मा जी ने भगवान शिव की बातों का समर्थन करते हुए कहा––"वत्स नारद अब तो तुमने अपनी आँखों से ही देख लिया कि सुदामा ब्राह्मण की "सख्य" भक्ति से सन्तुष्ट होकर भगवान श्रीकृष्ण ने उनकी झोपड़ी को राजमहल में परिवर्तित कर दिया है। अब सुदामा ब्राह्मण के साथ "सख्य" भक्ति का परीक्षण करने से क्या लाभ? हम लोग यहीं से वापस चले चलें।" भगवान शिव जी ने भी यही कहा --"सुदामा ब्राह्मण की "सख्य" भक्ति की शक्ति को देखकर स्वयमेव सिद्ध हो गया कि सुदामा ही–– "सख्य" भक्ति में अद्वितीय हैं। फिर अनायास ही श्री सुदामा जी के पास चलकर हम लोग अपना समय क्यों बर्बाद करें? यहीं से हमें वापस लौट चलना चाहिये।" श्री नारद जी व्याकुल मन से बोले –भगवन्, मेरे मन में शंका बनी ही रह जायेगी। सुदामा का परीक्षण लेने पर ही मुझे शान्ति मिलेगी। अतः कृपा करके आप दोनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे साथ चलकर सुदामा की "सख्य" भक्ति का परीक्षण अवश्य करें। और हाँ अब तक सातों भक्तियों में वेश बदलकर हम लोग परीक्षण में सम्मिलित होते रहे किन्तु अब की बार अपने वास्तविक रूप में सुदामा के साथ परीक्षण करेंगे।" भगवान शिव जी एवं ब्रह्मा जी श्री नारद जी के इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिये। और अपने-अपने वास्तविक रूप में ही वे सब सुदामा ब्राह्मण के द्वार पर जा पहुँचे। सुदामा जी उस समय भगवान के मन्दिर में झाड़ू से सफाई कर रहे थे। और धीरे-धीरे भगवान का भजन गाते जा रहे थे।

सहसा अपने द्वार पर आये तीनों देवताओं को देखकर सुदामा जी हर्ष विभोर हो गये। दौड़ते हुए तीनों देवताओं के चरणों पर लोट गये। भगवान् शंकर जी ने उन्हें उठाते हुए कहा—'सुदामा जी आपका कल्याण हो। हम लोग आज आप के पास एक विशेष कार्य से आये हैं।" सुदामा जी ने कृतज्ञता के भाव को प्रदर्शित करते हुए कहा—"हे परमेश्वर, आप की आज्ञा का पालन कर मैं धन्य एव कृतकृत्य हो जाऊँगा। आप आदेश करें।" भगवान शिव ने कहा—आप के साथ श्री नारद जी "सख्य" भक्ति की परीक्षा दगे। वे यह देखना चाहते हैं "सख्य" भक्ति में आप इनसे बढ़कर है या कम।" सुदामा जी भगवान शिव के वचन सुन आश्चर्य चकित हो बोले—"प्रभु, आप यह क्या कह रहे हैं? कहाँ दिन रात अनवरत भगवान का भजन करनेवाले भगवान श्री नारद जी और कहाँ मैं पृथ्वी लोक का एक तुच्छ ब्राह्मण। भगवान श्री नारद जी के चरणों की धूल भी मैं हो जाऊँ तो अपने को धन्य मान लूँ। भला मैं भगवान श्री नारद जी की बराबरी करने का कभी साहस कर सकता हूँ? हे परमेश्वर, मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि भगवान श्री नारद जी की मेरे साथ तुलना कर उनकी महिमा को कम मत करें।" भगवान शिव जी ने कहा—"सुदामा जी यह केवल मेरी ही इच्छा नहीं है अपितु भगवान् श्री नारद जी की भी यही इच्छा है।" भगवान शिव जी की ऐसी वाणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनकर सुदामा जी इतना संकोच में पड़ गये, जैसे वह पृथ्वी में समा जायेंगे। उनके मुँह से एक वाणी भी नहीं निकली। श्री नारद जी ने स्वयं कहा—"सुदामा जी, भगवान शिव जी ठीक ही कह रहे हैं। मैं ही इन्हें और अपने पिता श्री ब्रह्मा जी को साथ लेकर आया हूँ। अब आप के साथ "सख्य" भक्ति का परीक्षण करके ही वापस जाऊँगा। श्री नारद जी की दृढ़ता के समक्ष सुदामा जी निरुत्तर हो गये। और उनकी बात मानकर उनके साथ "सख्य" भक्ति की परीक्षा के लिये तैयार होना ही पड़ा उन्हें। सुदामा जी ने कहा—"प्रभु, यह परीक्षण चलकर हम लोग भगवान वासुदेव के मन्दिर में करें।" श्री नारद जी तत्काल तैयार हो गये।

सोने चाँदी के महलों के बीच एक दिव्य मन्दिर था। वह पूर्ण रूप से रत्नों से जटित था। देखकर श्री नारद जी चौंधिया गये। उनको सुदामा जी का निवास ही अजीब सा लगा। उन्होंने भगवान शिवजी से कहा—"भगवन्, सुदामा जी तो द्वारकाधीश भगवान श्रीकृष्ण की तरह वैभवशाली जीवन बिता रहा है। इसी से मालूम पड़ रहा है कि सुदामा भगवान श्रीकृष्ण का परम मित्र हैं। परन्तु यह भगवान का हृदय से भजन करता है, इसमें मुझ सन्देह है। भगवान शिव ने श्री नारद जी को मौन रहने के लिये संकेत कर धीरे से कहा—"आप मौन रहिये. अभी दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा। मन्दिर के अन्दर पहुँच कर सभी लोगों ने आपस में विचार किया कि "सख्य" भक्ति के परीक्षण में भगवान प्रकट होकर जिसके कन्धे पर हाथ रख दें, वही विजयी माना जायेगा। और "सख्य" भक्ति का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी भी वही माना जायेगा। इसमें वीणा का ही एक मात्र प्रयोग किया जायेगा। और श्री सुदामा जी अपनी वीणा के साथ और दो वीणा की व्यवस्था करें। एक भगवान शिव के लिये, दूसरी श्री ब्रह्मा जी के लिये। श्री नारद जी तो हर क्षण अपनी वीणा लिये ही रहते हैं।" सभी ने एक मत हो इस प्रक्रिया को स्वीकार कर लिया। श्री सुदामा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी ने नीरद वीणा तत्काल उपस्थित करा दिया और सभी "सख्य" भक्ति परीक्षण में तत्पर हो गये। श्री नारद जी मन ही मन प्रसन्न थे कि निरन्तर वीणा बजाने से मेरी वीणा का ही स्वर सबसे अच्छा रहेगा। इससे स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि "सख्य" भक्ति में सारी परिस्थिति मेरे ही अनुकूल है और इस भक्ति में निःसन्देह विजयी मैं ही रहूँगा।" सर्व सम्मति से ऐसा निश्चय कर श्री नारद जी एवं सुदामा जो भगवान की प्रतिमा के सामने खड़े होकर अपनी-अपनी वीणा बजाते हूए भगवान को "सखा" रूप में प्रकट होने के लिए आव्हाहन करने लगे। इधर भगवान शिव एवं ब्रह्मा जी भी अपनी-अपनी वीणा का तार सँभाल लिये और उसकी झंकार से भगवान को पुकारने लगे। सुदामा जी वीणा बजाते हुए भगवान का आवा-हन करते-करते रोन लगे। और रोते हुए गद्‌गद कण्ठ से कहने लगे — 'हे भगवन्, आप की महिमा अपार है। आज मैं मान गया कि आप मेरे आराध्य देव मात्र नहीं हैं अपितु मेरे सखा भी है। क्योंकि मुझे आप का सखा मानकर ही आज इन तीनों देवताओं का मेरे यहाँ शुभागमन हुआ है। मैं धन्य हो गया। कृतार्थ हो गया। भगवान शिव जी साक्षात् परमेश्वर हैं। भगवान ब्रह्मा जी सम्पूर्ण सृष्टि के रचयिता हैं। भगवान श्री नारद जी आप के २४ अवतारों में तृतीय अवतार हैं। य सब आज मुझ जंसे तुच्छ ब्राह्मण को दर्शन देने चले आये हैं। मैं सनाथ हो गया। मनुष्य जीवन की इससे बढ़कर और क्या सार्थकता हो सकती है जिसे य तीनों भगवान दर्शन दे दें। यह सब आप की कृपा है प्रभु। आप को मेरा बारम्बार प्रणाम है।" इतना कहते कहते सुदामा जी का कण्ठ अवरुद्ध हो गया। वाणी रुक गई। भाव विह्वल होने के कारण उनके हाथ से वीणा गिर गई। वह भगवान के श्री चरणों में लोट गये।

श्री सुदामा जी की ऐसी दशा देखकर श्री नारद जी मन ही मन बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा — "सुदामा आज हम ही तीनों देवताओं

CC-0.Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को देखकर अपने को सौभाग्यशाली मान रहा है। जबकि मैं अपने पिता श्री ब्रह्मा जी एवं भगवान शिव जी का दर्शन तो बराबर करता ही रहता हूँ। इससे यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि "सख्य" में मैं अवश्य ही विजयी होकर रहूँगा। अब तक का मेरा सारा श्रम सफल हो जायेगा।" ऐसा सोच-सोचकर श्री नारद जी मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए और अपने वीणा के स्वर को और अधिक सुरीली तान में छेड़ने लगे। इसी समय एक मलिन ब्राह्मण आया और श्री नारद जी के वीणा के स्वर को कान लगाकर सुनने लगा। एक क्षण सुनने के बाद वह ठहाका लगाकर हँसने लगा। हा हा हा हा हा... ... ...। श्री नारद जी उसे इस प्रकार हँसते देखकर काफी क्षुब्ध हुए। किन्तु इस समय वह वीणा बजाने में लगे हुए थे, इसलिये कुछ बोले नहीं। वह ब्राह्मण फिर ठहाका लगाया —हा हा हा हा हा ......। श्री नारद जी अब की बार उसकी ओर लाल-लाल आँखें कर इस प्रकार ताकने लगे जैसे अभी उसे खा जायेंगे। किन्तु वीणा का स्वर बेसुरा न हो जाय, इसके लिये वह वीणा बजाते ही रहे। इधर श्री सुदामा जी, भगवान शिव जी एवं श्री ब्रह्मा जी भगवान को सखा के रूप में सामने आने के लिये आवाहन करते जा रहे थे। वह ब्राह्मण फिर तीसरी बार बहुत ही जोर से ठहाका लगाया —हा हा हा हा हा। अब तो श्री नारद जी का धैर्य डगमगा गया। भयंकर क्रोध से व्याकुल होकर सशरीर खा जाने वाली दृष्टि से उस ब्राह्मण पर उबल पड़े—"रे मलिन ब्राह्मण, तू यहाँ कैसे आ गया ? तुम क्या जानो कि सुर ताल क्या होता है ? कहावत भी कही गयी है—"बन्दर क्या जानं अदरक का स्वाद ?" जाओ अपना कार्य करो। इतना सुनते ही उस ब्राह्मण ने झपट कर श्री नारद जी की वीणा उनके हाथ से छीन लिया। उसी वेग से श्री सुदामा जी, भगवान शिवजी एवं श्री ब्रह्मा जी की भी वीणा छीन लिया उस ब्राह्मण ने। और कहने लगा—"अरे मूर्खो, तुम लोगों को तो वीणा के तार का एक स्वर भी मालूम नहीं है। देखो,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं बजाकर स्वर निकालता हूँ। इसी स्वर से भगवान सखा रूप में सामने आ जायेंगे।" सुदामा जी बिना वीणा के ही भगवान का आवाहन करने लगे। और भगवान शिव तथा श्री ब्रह्मा जी उस ब्राह्मण की ओर आश्चर्य चकित होकर देखने लगे उसके वीणा के स्वर की प्रतीक्षा करने लगे। किन्तु श्री नारद जी उस ब्राह्मण के इस अप्रत्याशित व्यवहार से काफी क्षुब्ध हुए। क्रोध की चरम सीमा पर पहुँचकर शाप देने के लिये दायें हाथ को उठाने चले। वह हाथ जाकर उनकी दाहिनी आँख को मूँद लिया और उसी के साथ बायाँ हाथ भी स्वयं उठकर बायीं आँख को मूँद लिया। इस प्रकार श्री नारद जी के दोनों हाथ दोनों आँखों पर जाकर चिपक गये। अपनी दोनों आँखें मुँद जाने के कारण वह कुछ भी देखने मे असमथ हो गये। वीणा का स्वर उनके कानों में जाने लगा। यह स्वर उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई उनके कानों में गर्म शीशा डाल रहा हो। अपमान से वह उबल रहे थे।

थोड़ी देर बाद श्री नारद जी के दोनों हाथ छूट गये। सामने का दृश्य देखकर आश्चर्य चकित रह गये वह। ब्राह्मण के स्थान पर भगवान विष्णु वीणा बजा रहे हैं और श्री सुदामा जी वीणा की तान पर नृत्य कर रहे हैं। भगवान शिव जी एवं श्री ब्रह्मा जी श्री सुदामा जी के भाव नृत्य को देखकर आनन्द विभोर हो रहे हैं। सहसा ब्राह्मण रूप से परिवर्तित भगवान विष्णु ने वीणा बजाना बन्द कर श्री सुदामा जी के कन्धे पर हाथ रख दिया। श्री सुदामा जी भगवान विष्णु के कर कमल का स्पर्श पाकर पुलकित हो गये। उनका नृत्य रुक गया। वह तत्काल भगवान विष्णु के चरणों पर लोट गये। श्री नारद जी ने त्रिदेवों को प्रणाम किया। भगवान विष्णु के चरण पर लेटे श्री सुदामा जी को दोनों हाथों से उठाकर अपने गले लगा लिया। और बोले—'भक्तराज, मेरे सखा सुदामा, तुम मेरे चरणों के नहीं अपितु मेरे वक्षस्थल पर आलिंगन के अधिकारी हो। तुम मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परम प्रिय सखा हो।" ऐसा कहकर भगवान विष्णु ने श्री सुदामा जी को श्रीकृष्ण के रूप में दर्शन दिया। श्री सुदामा जी श्रीकृष्ण के चरणों पर पुनः लेटना चाहे किन्तु बीच में ही भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें पकड़ लिया और गले लगाते हुए कहा—"मेरे प्रिय सखा, विप्र सुदामा, मैंने तुम्हारा चरण धोकर अपने घर परिवार और स्वयं को पवित्र किया था। तुम केवल मेरे सखा ही नहीं अपितु एक ब्राह्मण भी हो। और तुम्हें यह तो ज्ञात ही है कि पृथ्वी के विप्रों की मैं भी पूजा करता हूँ वे मेरे ही प्रतिरूप हैं।" श्री नारद जी का भ्रम टूट चुका था। दौड़। कर उन्होंने श्री सुदामा जी को गले लगा लिया और गद्गद् कण्ठ से बोल पड़े—"श्री सुदामा जी. आप ही "सख्य" भक्ति के सर्वश्रेष्ठ अधिकारी हैं।" इस प्रकार हर्ष से विभोर श्री नारद जी, भगवान शिव जी एवं श्री ब्रह्मा जी ने भगवान श्रीकृष्ण को प्रणाम किया।

कथा—९— नवम् भक्ति का अधिकारी

भगवान श्री नारद जी जब तक भक्ति परीक्षण में नहीं लगे थे तब तक तो उन्हें इस बात का स्वप्न में भी ध्यान नहीं था कि तीनों लोकों में उनसे बढ़कर भी कोई भक्त है। किन्तु एक-दो नहीं अपितु आठों भक्तियों में लगातार परीक्षण में वह असफल होते गये। मात्र नवम भक्ति शेष रह गयी थी। श्री नारद जी ग्लानि से भर उठे थे। उनका जीवन उन्हें निःसार लगने लगा था। उन्होंने विचार किया— "अब जीवन धारण करना व्यर्थ है। यदि मेरा तन-मन-धन-वचन आदि भगवान श्री विष्णु जी के श्री चरणों में पूर्ण रूपेण समर्पित नहीं है तो ऐसे जीवन से क्या लाभ? केवल एक भक्ति "आत्म निवेदन" शेष रह गयी है। जब मैं आठों भक्तियों में असफल हो गया तो क्या प्रत्याभूति है कि नवीं में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होऊँ। परीक्षण करना इसलिये अब व्यर्थ सिद्ध होगा कि यदि नवीं भक्ति में भी कोई दूसरा मुझसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़कर सिद्ध हो गया तो उसी समय मुझ आत्महत्या के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय नहीं बचेगा। अत: इसमें भी असफल होकर अपनी हँसी उड़ाकर आत्म हत्या भी बेकार हो जायेगी। अब उचित यही है कि नवम् भक्ति के परीक्षण के बिना ही प्राण छोड़ दूँ।" ऐसा विचार करने पर श्री नारद जी के सामने एक अन्य समस्या उपस्थित हो गयी कि प्राण कैसे छोड़ा जाय?

बिचार करते-करते श्री नारद जी परेशान हो गये। उन्होंने सोचा— "यदि किसी से विष प्राप्त करने की इच्छा प्रगट करूँ तो वह प्रश्न करेगा कि मैं विष लेकर क्या करूँगा? यदि पर्वत पर से कूद जाऊँ तो एक और आपत्ति सिर पर आ सकती है कि हाथ पैर तो टूट जाय और प्राण न निकले। फिर चलने-फिरने में असमर्थ मैं आत्म हत्या कैसे करूँगा? ऐसी अवस्था में लोग और हँसी उड़ायेंगे। किसी नदी में डूबकर मरने की यदि चेष्टा करूँ, उस समय प्राण निकलने के पहले ही कोई देख ले और मुझे नदी में से बाहर निकाल लाये। ऐसी अवस्था में तो मैं किसी को भी मुँह दिखलाने योग्य नहीं रह जाऊँगा" इस प्रकार विचार करते-करते उन्हें एक उपाय सहसा सूझ गया— "किसी निर्जन वन के वृक्ष की डाल पर रस्सी बाँधकर उसका फन्दा बनाकर अपने गले में डालकर लटक जाऊँ तो प्राण अवश्य निकल जायेगा। और यहाँ मुझे कोई देख भी नहीं सकेगा।" ऐसा विचार कर श्री नारद जी आत्महत्या के लिये तैयार हो गये।

इसी समय श्री ब्रह्मा जी आ गये। उन्होंने देखा श्री नारद जी बहुत दु:खी हैं। उन्होंने कहा - "वत्स नारद, चिन्ता मत करो। भगवान की आठों भक्तियों में असफल होने से क्या होता है। अभी नवीं भक्ति शेष है। चलकर भगवान विष्णु से पूछ लिया जाय कि इस भक्ति में किसके साथ परीक्षण किया जाय? जिसे वे बतावें, उसके गुण और स्वभाव का अध्ययन कर अपने में सुधार लाओ, और जब यह पक्का हो जाय कि तुम उसमें पूर्ण रूपेण परिपक्व हो गये हो तब परीक्षण के लिये तैयार होओ। निश्चय ही इस उपाय से नवीं भक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में तुम सफल हो जाओगे।" श्री ब्रह्मा जी की सहानुभूति पूर्ण वाणी सुनकर श्री नारद जी फूट-फूट कर रोने लगे। गद्‌गद् कण्ठ से कहा उन्होंने—"पिता जी, मैं आपका पुत्र होकर भी आप के मस्तक को ऊँचा नहीं कर सका। भगवान श्री विष्णु जी की आठों भक्तियों में मैं असफल हो गया। अब केवल एक भक्ति से क्या होता है? उसमें यदि किसी प्रकार विजयी भी हो गया तो आठों भक्तियों की असफलता का सामना मुझे आजीवन करना पड़ेगा ही। ऐसे जीवन को धिक्कार है। मेरे कारण आप का भी अपमान हो रहा है। लोगों में यह बात फैल गयी है कि श्री ब्रह्मा जी के पुत्र नारद जी का जीवन धारण करना ही व्यर्थ हो गया। अब मैं क्या करूं?" ऐसा कहकर श्री नारद जी और बिलख कर रोने लगे। वह अपनी आत्महत्या की बात बताना नहीं चाहते थे, क्योंकि श्री ब्रह्मा जी पता नहीं क्या सोचेंगे? और रोकेंगे भी।

श्री नारद जी को इस प्रकार रोते हुए देखकर श्री ब्रह्माजी आश्वासन देने लगे। इसी समय भगवान शिव जी भी आ गये। उन्होंने देखा कि श्री नारद जी बेजार रो रहे हैं। सान्त्वना देते हुए भगवान शिव जी ने कहा—"श्री नारद जी, आप भगवान के २४ अवतारों में तीसरे अवतार होकर भी अपने मन को इतना छोटा क्यों कर रहे हैं? भला रोने से क्या लाभ होगा? चलिये अबकी बार नवीं भक्ति में आप अवश्य सफल होंगे। इसमें सफलता पाते ही आप की खोई हुई प्रतिष्ठा वापस लौट आयेगी।" भगवान शिव जी की सहानुभूति पूर्ण वाणी सुनकर श्री नारद जी और फूट-फूटकर रोने लगे। आज उन्हें श्री ब्रह्मा जी एवं भगवान शिव जी बहुत बड़े सहायक के रूप में दिखाई पड़ रहे थे। लगातार आठों भक्तियों में असफलता प्राप्त करने के कारण श्री नारद जी अपना सिर ऊपर नहीं कर पा रहे थे। केवल रोते जा रहे थे। भगवान शिव जी ने उनके दोनों हाथ को पकड़कर उन्हें उठाया और कहने लगे—"श्री नारद जी इस तरह से अपना मन छोटा मत कीजिये। धैर्य धारण कीजिये। इतना अधिक रोयेंगे तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप का सिर दर्द करने लगेगा। शान्त हो जाइये, सब ठीक हो जायेगा।" श्री ब्रह्मा जी एवं भगवान शिवजी के सहानुभूति पूर्ण वाक्यों को सुनकर श्री नारद जी अपने को रोक न सके। रोते हुए गद्गद् कण्ठ से बोल पड़े - "मैं अब अपना प्राण धारण करना नहीं चाहता। जाकर वृक्ष में रस्सी बाँधकर, उसका फन्दा बनाकर गले में लगाकर लटक जाऊँगा। प्राण त्याग दूँगा। किन्तु भगवान की भक्ति के बिना जीवन धारण नहीं करूँगा। केवल एक भक्ति नवम में परीक्षण के बाद यदि मैं जीत भी गया तो ऐसी जीत से क्या लाभ ? जब मैं आठ भक्ति में असफल हो चुका हूँ तो एक में विजयी होकर क्या करूँगा ?" ऐसा कहकर श्री नारद जी भगवान शिव जी से अपना हाथ छुड़ाकर आत्म हत्या के लिये जाने लगे।

यहाँ एक विचित्र घटना घट गई। श्री नारद जी के सामने सहसा भगवान विष्णु आ गये। श्री नारद जी भगवान विष्णु को सामने देख कर उनके चरणों पर लोट गये। और अब तो इनके रोने का कोई अन्त नहीं था। रोते-रोते उनका गला तो पहले से ही अवरुद्ध हो गया था। अब तो वह बोल भी नहीं पा रहे थे। भगवान विष्णु के श्री चरणों को पकड़े हुए उन्होंने रोते-रोते ही किसी प्रकार से कहा- "प्रभु, मैं आप की आठ भक्तियों में असफल हो चुका हूँ। केवल एक भक्ति नवम शेष है। इसमें यदि मैं सर्वश्रेष्ठ अधिकारी सिद्ध भी हो गया तो भी अन्य भक्तियों के बिना भला जीवन किस कार्य का ? अब मैं मृत्यु को ही वरण करना चाहता हूँ। अन्त में आखिर आप का दर्शन हो ही गया। अब आप मुझे आज्ञा दें। मैं आत्म हत्या करने जा रहा हूँ।" भगवान विष्णु ने श्री नारद जी के दोनों हाथों को पकड़ कर उठाते हुए कहा—"भक्तराज श्री नारद जी आप ने वास्तविकता को अभी तक जाना नहीं। आज मैं आप को वास्तविकता बतलाता हूँ। सुनिये, प्रथम भक्ति "श्रवण" से लेकर अष्टम भक्ति "सख्य" तक परीक्षण के लिये किसने चेष्टा किया ? महाराज जनक से लेकर सुदामा तक के आठों भक्तों ने या आप ने ? निःसन्देह आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने ही किया। आप के मन में उत्पन्न हुई भ्रान्ति को दूर करने के लिए माया का विधान मुझे करना पड़ा। आठों भक्तियों में आप से बढ़कर अन्य भक्त निकल आये। यह आप को सहन नहीं है। आप मेरी भक्ति के बिना अपना प्राण त्यागने को तैयार हैं। "आत्म निवेदन" भक्ति तो यही हैं। भक्तराज मेरी नवों भक्तियों में आप ही सर्व-श्रेष्ठ हैं। और उपर्युक्त मेरे आठों भक्तों को यह अच्छी तरह से ज्ञात है कि आप से बढ़कर मेरा कोई दूसरा भक्त नहीं है। मेरी प्रेरणा से ये सब मौन रह गये। अन्यथा ये आप को पहले ही बता देते।" इसी समय एक अद्भुत घटना पुनः घटी।

भगवान श्री विष्णु जी ने कहा—"श्री नारद जी, देखिये, अपनी आँखों के सामने।" ऐसा कहकर संकेत करते हैं—आठों भक्तियों के सम्पूर्ण भक्तगण हाथ जोड़कर श्री नारद जी को प्रणाम कर रहे हैं। भगवान विष्णु के संकेत से सभी भक्तों ने एक स्वर में कहा—"भक्त सिरोमणि श्री नारद जी की जय।" भगवान श्री विष्णु, भगवान शिव जी एवं श्री ब्रह्मा जी भक्तराज श्री नारद जी को आशीर्वाद देने लगे। श्री नारद जी उनके चरणों पर लोट गये। अब सबने मिलकर श्री नारद जी की जय जयकार की॥

यह नव भक्ति भगवान को समर्पित है॥
"बोलिये भक्त एव भगवान की जय॥"

॥ नव भक्ति कथा समाप्त ॥

॥ शुभम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आचार्य जी का संक्षिप्त परिचय—

श्री राममूरति द्विवेदी

शिक्षा—साहित्याचार्य, वेदान्ताचार्य (विशिष्टाद्वैत)
एम. ए. (मनोविज्ञान), एल. एल. बी.

'नवभक्ति'' से पूर्व की प्रकाशित रचना—

१—वेदान्ते भक्तिस्वरूपम् [संस्कृत]

हिन्दी की रचनायें —

२—श्री मद्भागवत महापुराण एवं आचार्य श्री राममूरति द्विवेदी

३—क्यों,

४—सिनेमा और समाज,

५—कृष्ण प्रेम [कविता]

६—श्री त्रिलोचनेश्वर महादेव की महिमा

७—विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित

सौ से अधिक कथायें [हिन्दी एवं उर्दू में]

अप्रकाशित रचना —

१—"विशिष्टाद्वैत सिद्धान्ते द्वैताद्वैतयोः सामञ्जस्यम्" शोध ग्रन्थ संस्कृत में

(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)

२—"सन्देश" हिन्दी में [उपन्यास]

वर्तमान जीवन—कथा मात्रैक जीवी

॥ शुभम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri